दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक



7

3 महीनेभर में 850 रुपये प्रति क्विंटल महंगी हुई चीनी

5 अजब प्रेम की गजब कहानी

8 एशियाड के पदकवीरों का सम्मान

UPHIN/2023/90814 | वर्ष: 04, अंक: 17 | पृष्ठ संख्या: 8 | मूल्य: 1.00 रू. | सोमवार 19 अक्टूबर, 2026

लोहिया ला यूनिवर्सिटी दीक्षांत समारोह

2017 से पहले था रूल आफ माफिया : सीएम योगी

लखनऊ,संवाददाता। लखनऊ में लोहिया विधि विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 2017 से पहले उत्तर प्रदेश में माफिया का दबदबा था, लेकिन उनकी सरकार ने कानून का राज लागू किया। कार्यक्रम में न्यायमूर्ति विक्रम नाथ ने भी संबोधित किया और अपने हल्के–फुल्के अंदाज से उपस्थित लोगों का ध्यान खींचा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश श्रूल ऑफ माफियाश से मुक्त हुआ है और श्रूल ऑफ लॉश लागू हुआ है। वर्ष 2017 से पहले कानून–व्यवस्था और निवेश को लेकर संदेह रहता था। माफिया से विकास बाधित था। सरकार ने कानून का शासन स्थापित कर प्रदेश की छवि बदली है। कोई व्यक्ति या पद संविधान से ऊपर नहीं हो सकता। उन्होंने युवा अधिवक्ताओं से कहा कि अन्याय सामने हो तो चुप रहना विकल्प नहीं है। फैसला इतिहास सुनाएगा, लेकिन बहस आपको करनी है। मुख्यमंत्री योगी शनिवार को डॉ. राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के पंचम दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर पुष्प अर्पित किए। छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। मुख्यमंत्री ने मेधावियों को पदक दिए।

आपातकाल ने समझाया कानून और शासक के शासन का अंतर

मुख्यमंत्री ने कहा कि 15 अगस्त 1947 और 26 जनवरी 1950 के साथ 25 जून 1975 भी लोकतंत्र की महत्वपूर्ण तारीख है। आपातकाल ने रूल ऑफ लॉ और रूलर ऑफ लॉ का अंतर समझाया।



न्यायमूर्ति एचआर खन्ना की असहमति का उल्लेख करते हुए कहा कि सिद्धांतों के पक्ष में लिया निर्णय इतिहास में स्थान बनाता है। युवा अधिवक्ताओं को संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः को चौंबर की दीवार पर नहीं, हृदय में उतारें। सत्य और निरंतर अध्ययन अधिवक्ता के जीवन का आधार हो। डॉ. लोहिया के विचारों का उल्लेख करते हुए कहा कि विधिवेत्ता में शिव जैसा मस्तिष्क, कृष्ण जैसा हृदय और राम जैसा वचन होना चाहिए। मुख्यमंत्री ने विकसित भारत की परिकल्पना को मुकदमे के रूप में प्रस्तुत किया। कहा कि 140 करोड़ देशवासियों के इस दावे की पैरवी तथ्यों, साक्ष्यों और ईमानदारी से करनी होगी। वर्ष 2047 तक विकसित भारत के संकल्प में युवा अधिवक्ताओं की भूमिका होगी। प्रदेश को 2029–30 तक एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की कार्ययोजना तैयार है।

एआई को सहायक बनाएं, सारथी नहीं

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता काम आसान कर सकती है, लेकिन अंतिम निर्णय इंसान के विवेक से होना चाहिए। लापरवाह मसौदे से निर्दोष व्यक्ति को स्वतंत्रता गंवानी पड़ सकती है। डीपफेक और साइबर अपराधों ने साक्ष्यों की विश्वसनीयता की चुनौती पैदा की है। प्रदेश के 75 जिलों में साइबर थाने और 1,583 थानों में साइबर हेल्प डेस्क हैं। श्एआई प्रज्ञाश से 10 लाख युवाओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को अन्याय के खिलाफ खड़े होने, जड़ों से जुड़े रहने और निरंतर अध्ययन की सीख दी। कहा कि गांवों में जमीन और पारिवारिक विवादों के समाधान में योगदान दें। गलत काम का दबाव आए तो सिद्धांतों से समझौता न करें।

दूसरों के जीवन में बदलाव से तय होगी सफलता

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति विक्रम नाथ ने कहा कि उपाधि मंजिल नहीं, नई यात्रा की शुरुआत है। शिक्षा की वास्तविक परीक्षा विश्वविद्यालय से बाहर शुरू होती है। सफलता का आकलन इससे होगा कि विद्यार्थी दूसरों के जीवन में कितना सकारात्मक बदलाव लाते हैं। उन्होंने संवैधानिक मूल्यों, करुणा और संवेदनशीलता को जीवन में उतारने का आह्वान किया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश अरुण भंसाली ने कहा कि विधि शिक्षा में विश्वविद्यालय का विशेष स्थान है। संस्थान ने न्यायपालिका, विधि शिक्षा और लोकसेवा में योगदान दिया है। उन्होंने विश्वास जताया कि विद्यार्थी उच्च मानकों और परंपराओं को आगे बढ़ाते हुए कानून का शासन मजबूत करेंगे।

20 वर्षों में 250 से अधिक न्यायिक अधिकारी दिए

कुलपति प्रो. अमर पाल सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय ने 20 वर्षों में उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों की न्यायिक सेवाओं को 250 से अधिक अधिकारी दिए हैं। यहां से शिक्षित विधि विशेषज्ञ विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दे रहे हैं। विधि शिक्षा केवल भौतिक सफलता नहीं, समाज सेवा का माध्यम भी है। इसका उपयोग वंचित वर्गों के कल्याण में हो।

रुपाली और तेजस्वनी को स्वर्ण पदक

एलएलएम में रुपाली जायसवाल को स्वर्ण, चित्रा सिंह को रजत और सौम्या गिरी को कांस्य पदक मिला। एलएलबी ऑनर्स में तेजस्वनी कौशल को स्वर्ण, ईशा अग्रवाल को रजत और निशा वर्मा को कांस्य पदक मिला। ईशा अग्रवाल को क्रिमिनल लॉ में जस्टिस ओपी प्रधान मेमोरियल, कॉन्स्टिट्यूशनल लॉ में पद्मावती मोहनलाल जरीवाला और स्टूडेंट ऑफ द ईयर के लिए वीरेंद्र भाटिया स्वर्ण पदक मिला। तान्या वर्मा को टैक्सेशन में प्रदीप कुमार अग्रवाल मेमोरियल और मालविका पचौरी को सर्वश्रेष्ठ मूटिंग के लिए केके लूथरा मेमोरियल स्वर्ण पदक मिला।

डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के मेधावी भी सम्मानित

साइबर लॉ में भास्कर पांडे, जयंत अग्रवाल और चिराग निगम को क्रमशः स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक मिला। बौद्धिक संपदा अधिकार में आशी पांडे, रितेश मेहता और ईशा अस्थाना को क्रमशः स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक मिले। मीडिया लॉ में अंशुमान सिंह को स्वर्ण और संतुष्ट सोनकर को रजत पदक मिला।

गोरखपुर सीएमओ डा. राजेश झा का तबादला

स्वास्थ्य विभाग में बड़ा फेरबदल



संवाददाता, गोरखपुर। स्वास्थ्य विभाग में प्रशासनिक फेरबदल के तहत गोरखपुर के मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) डॉ. राजेश झा का भी स्थानांतरण हो गया है।

उन्हें महानिदेशालय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं में राज्य क्षय रोग अधिकारी के पद पर नई तैनाती दी गई है।

हालांकि, गोरखपुर में अभी नए सीएमओ की नियुक्ति नहीं हुई है। उनके स्थान पर किसी अधिकारी की तैनाती नहीं होने से पद रिक्त रहेगा। इसके अलावा डॉ. बद्री प्रसाद को अपर निदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, गोरखपुर मंडल बनाया गया है।

डॉ. शलभ मोहन को जिला महिला अस्पताल और डॉ. संजय कुमार वर्मा को जिला चिकित्सालय गोरखपुर का प्रमुख अधीक्षक नियुक्त किया गया है। डॉ. बद्री प्रसाद इससे पहले गौरीगंज, अमेठी स्थित जिला संयुक्त चिकित्सालय में मुख्य चिकित्सा अधीक्षक के पद पर तैनात थे। उन्हें गोरखपुर मंडल में अपर निदेशक की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

वहीं, डॉ. शलभ मोहन कानपुर देहात के मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में जिला लॉजिस्टिक अधिकारी के पद पर कार्यरत थे। स्थानांतरण के बाद उन्हें जिला महिला अस्पताल, गोरखपुर का प्रमुख अधीक्षक बनाया गया है।

इसी तरह मुजफ्फरनगर जिला चिकित्सालय में मुख्य चिकित्सा अधीक्षक के पद पर तैनात डॉ. संजय कुमार वर्मा को जिला चिकित्सालय गोरखपुर का प्रमुख अधीक्षक नियुक्त किया गया है।

स्वास्थ्य विभाग के इस फेरबदल में गोरखपुर मंडल के अपर निदेशक, जिला महिला अस्पताल और जिला चिकित्सालय के प्रमुख अधीक्षक के साथ जिले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी का भी स्थानांतरण हुआ है।

कानूनी पेशा कमजोर दिल वालों के लिए नहीः सीजेआई सूर्यकांत

> कानूनी शिक्षा का उद्देश्य आपराधिक या संवैधानिक कानून के सिद्धांतों को सीखने तक सीमित नहीं है। इसका असली महत्व उन लोगों से मिलने और उनके नजरिये को समझने के अनुभव में है, जो दुनिया को हमसे अलग तरह से देखते हैं।
>
> *जस्टिस सूर्यकांत, सीजेआई*



दिल्ली,एजेंसी। भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने बेंगलुरु में नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी के 34वें दीक्षांत समारोह में कानून के स्नातकों को न्याय और संवैधानिक मूल्यों के प्रति समर्पित रहने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि एक अच्छे कानूनी पेशेवर के लिए कानूनों की जानकारी के साथ साहस, ईमानदारी और संवेदनशीलता भी जरूरी है।

भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत ने शनिवार को कानून की पढ़ाई पूरी करने वाले छात्रों से न्याय कायम रखने, स्वतंत्रता की रक्षा करने और संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहने की अपील की। उन्होंने कहा कि कानूनी पेशे में साहस, ईमानदारी और उन लोगों की बात सुनने की क्षमता जरूरी है, जिनकी आवाज अक्सर अनसुनी रह जाती है।

सीजेआई बंगलूरू में नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी (एनएलएसआईयू) के 34वें वार्षिक दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, कानूनी शिक्षा केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहनी चाहिए।

गोरखपुर में कत्ल–तुम मारो, मैं वीडियो बना रहा हूं...

गोरखपुर,संवाददाता। गोरखपुर के शिवम उर्फ आदर्श पांडेय की हत्या के मामले में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। मृतक के मोबाइल में गोली मारने से पहले का घटनाक्रम कैद मिला है। हत्यारोपियों के बेटे समेत तीन हिरासत में लिए गए हैं। रिश्तेदारों और कॉल डिटेल के जरिये पुलिस तलाश में जुटी है। गोरखपुर के हरपुर बुदहट के करनपुरा गांव में शिवम उर्फ आदर्श पांडेय की हत्या के मामले में मृतक के मोबाइल में मिला वीडियो जांच की अहम कड़ी बन गया है। वारदात से पहले शिवम ने आरोपियों के साथ हुए विवाद को मोबाइल में रिकॉर्ड किया था। वीडियो में उसके 'तुम मारो, मैं वीडियो बना रहा हूं' कहने की बात सामने आई है। उधर, पुलिस ने आरोपियों के बेटे समेत तीन लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। फरार आरोपियों



की तलाश में उनके रिश्तेदारों और संपर्कों की जानकारी जुटाने के साथ कॉल डिटेल खंगाली जा रही है। वारदात के बाद इस्तेमाल की गई मोपेड और लाइसेंसी बंदूक का पता लगाने के लिए सीसीटीवी फुटेज भी देखी जा रही है। करनपुरा गांव में बृहस्पतिवार सुबह करीब 10रू30 बजे खेत की जुताई को लेकर शुरू हुआ विवाद गोलीकांड में बदल गया था। आरोप है कि 60 वर्षीय चचेरे भाई लवकुश पांडेय ने अपने 63 वर्षीय भाई राधेश्याम पांडेय को शिवम पर गोली चलाने के लिए ललकारा। इसके बाद राधेश्याम ने अपनी लाइसेंसी बंदूक से गोली चला दी। गोली शिवम की पीठ में लगी और सीने को चीरते हुए निकल गई। घायल शिवम करीब 50 मीटर तक भागा, लेकिन सड़क के पास गिर पड़ा। अधिक खून बहने से उसकी मौत हो गई। घटना के बाद दोनों आरोपी अपनी मोपेड से मौके से भाग गए।

सम्पादकीय

एक आवश्यक निर्णय

सुप्रीम कोर्ट ने मतांतरित एससी ओबीसी को आरक्षण से वंचित किया
तमिलनाडु की मतांतरण समर्थक नीति को चुनौती मिली
धार्मिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग मतांतरण को बढ़ावा देता है

भले ही एक के बाद एक राज्य सरकारें छल–कपट से होने वाले मतांतरण को रोकने के कानून बना रही हों या उन्हें कठोर कर रही हों, लेकिन मतांतरण थम नहीं रहा है। यह अच्छा हुआ कि सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक निर्णय से यह स्पष्ट कर दिया कि यदि अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़ा वर्ग का कोई व्यक्ति मतांतरण कर लेता है तो फिर वह आरक्षण का लाभ पाने का अधिकारी नहीं रहेगा। हालांकि ऐसा ही निर्णय मद्रास उच्च न्यायालय ने भी दिया था, लेकिन तमिलनाडु सरकार ने उसे शीर्ष न्यायालय में चुनौती दी थी, क्योंकि वह अपने उस नियम को बनाए रखना चाहती थी, जिसके तहत उसने यह सुविधा दी थी कि यदि एससी या ओबीसी समुदाय के लोग इस्लाम या ईसाई मत अपना लेते हैं तो भी आरक्षण के लाभ पाते रह सकते हैं। यह केवल सनातन परिवार के आरक्षित वर्गों के अधिकारों में कटौती करने वाला ही नहीं, बल्कि एक तरह से मतांतरण को बल देने वाला नियम था।
इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि एससी या ओबीसी वर्ग के अनेक हिंदू, सिख या बौद्ध अपना धर्म त्याग देते हैं और फिर यह मांग करने लगते हैं कि मतांतरण के बाद भी उन्हें आरक्षण का लाभ मिलते रहना चाहिए। ऐसी मांग का समर्थन कई मुस्लिम एवं ईसाई संगठन भी करते हैं। हालांकि ऐसा करके वे अपने इस दावे की पोल ही खोलते हैं कि उनके यहां न तो जाति है और न ही किसी तरह का जातिगत भेदभाव। ध्यान रहे इसी तरह के दावों के बहाने ही वे निर्धन एवं अशिक्षित हिंदुओं, सिखों आदि को मतांतरित होने का प्रलोभन देते हैं। कटु सच्चाई यह है कि एससी अथवा ओबीसी वर्ग के लोग मतांतरित होने के बाद भी अपने नए पंथ में जातिगत भेदभाव और वैमनस्य का शिकार होते हैं। इसी कारण दलित ईसाइयों और दलित मुसलमानों के संगठन बने हुए हैं।
निःसंदेह समस्या केवल इतनी ही नहीं थी कि तमिलनाडु सरकार ने जैसा नियम बना रखा था, उससे मतांतरण कराने वालों को प्रोत्साहन मिल रहा था और एससी एवं ओबीसी के अधिकारों में सेंधमारी भी हो रही थी, बल्कि यह भी थी कि हिंदू धर्म त्यागने वाले एससी या ओबीसी आरक्षण के साथ ही अल्पसंख्यकों को मिलने वाले लाभ भी पाने लगते थे। इस दोहरे लाभ का आकर्षण भी छल–छद्म और लोभ–लालच से मतांतरण कराने वालों के पक्ष में काम करता था और इसका सबसे अधिक नुकसान हिंदू समाज उठाता था, क्योंकि सिखों और बौद्धों को तो अल्पसंख्यक दर्जा प्राप्त है।यह कोई छिपी बात नहीं कि हिंदू समाज खास तौर पर कपट और लालच से मतांतरण अभियानों में लिप्त ईसाई और मुस्लिम संगठनों के निशाने पर है। भले ही एक के बाद एक राज्य सरकारें छल–कपट से होने वाले मतांतरण को रोकने के कानून बना रही हों या उन्हें कठोर कर रही हों, लेकिन मतांतरण थम नहीं रहा है। इसका मूल कारण पंथ प्रचार की स्वतंत्रता का दुरुपयोग है। यह दुरुपयोग कैसे रुके, इस पर सरकार के साथ सुप्रीम कोर्ट को भी विचार करना चाहिए।

उग्र आंदोलनों के आगे असहाय जनता

अपने देश को आजादी ही आंदोलन के जरिये मिली थी, इसलिए उसकी एक परंपरा विकसित हो गई। इसलिए और भी, क्योंकि संविधान शांतिपूर्ण तरीके से धरना–प्रदर्शन का अधिकार देता है। यह अधिकार लोकतंत्र की एक शक्ति है। विडंबना यह रही कि आंदोलन की परंपरा विकसित होने के साथ ही विकृत भी होती गई। इसके चलते देश अराजकता भरे अनेक आंदोलनों का गवाह बना। कई बार इस अराजकता के चलते जान के साथ माल का भी भारी नुकसान हुआ है। आंदोलनों के उग्र हो जाने के परिणामस्वरूप पुलिसकर्मियों की भी जानें गई हैं। आंदोलनों के दौरान न जाने कितनी बार सार्वजनिक संपत्ति के साथ–साथ आम लोगों के वाहन जलाए गए हैं। इसका शायद ही किसी को अनुमान हो कि उग्र आंदोलनों के चलते ट्रेन की कितनी बोगियां फूंकी जा चुकी हैं और कितनी बसें एवं कारें तोड़ी या जलाई जा चुकी हैं। इसका भी हिसाब किसी के पास नहीं कि चक्का जाम आंदोलनों से वाहनों और रेलों का आवागमन रोक देने या फिर सड़क घेरकर बैठ जाने से कितने करोड़ों–करोड़ लोग परेशान होते रहते हैं। आंदोलनों के कारण अपने काम–धंधे के लिए निकले आम लोग खीझते रहते हैं, लेकिन उनकी पहले भी सुनवाई नहीं होती थी और अब भी नहीं होती। कोई उनकी पीड़ा को न सुनता है और न ही समझता है। आंदोलन से परेशान लोग किसी को कोसें, अंततः उनके हिस्से में क्षोभ और कुंठा ही आती है। सड़क पर उतरे कुछ सौ प्रदर्शनकारी अपने उग्र–अराजक रवैये से हजारों–लाखों लोगों की नाक में दम कर सकते हैं। याद करें सीएए के खिलाफ शाहीन बाग आंदोलन और कृषि कानून विरोधी आंदोलन। श्भारत बंदश की पुकार पर कई आंदोलन और विरोध प्रदर्शन देशव्यापी भी होते हैं, लेकिन अब ऐसा करते हुए ऐसे नारे भी लगने लगे हैं, शबंद दुकानें तुम्हारी, खुली दुकानें हमारी।श इसका अर्थ होता है कि यदि किसी ने देश, प्रदेश या जनपद बंद के दौरान दुकान खोलने का साहस किया तो उसमें तोड़फोड़ हो सकती है। अनेक ऐसे आंदोलन होते हैं, जिनमें प्रदर्शनकारी या तो एक स्थान पर नारेबाजी करते हैं या किसी अधिकारी के कार्यालय तक मार्च करते हुए जाते हैं और वहां उसे ज्ञापन देकर आते हैं।
आम तौर पर वे पुलिस बैरिकेडिंग से आगे नहीं बढ़ते, लेकिन अब बिना अनुमति धरना–प्रदर्शन करना और पुलिस बैरिकेडिंग गिराकर या लांघकर आगे बढ़ना आम हो गया है। जब ऐसा होता है तो पुलिस लाठीचार्ज करती है। कई बार भीड़ तितर–बितर हो जाती है, लेकिन कभी वह भी पिटती है और पुलिस भी। ऐसे मौकों पर भीड़ के उग्र हो जाने की स्थिति में उस पर गोली चलाने की भी नौबत आती रही है। अब तो पुलिस को अराजकता का सहारा ले रहे आंदोलनकारियों से ही नहीं, तमाशबीनों, पेशेवर आंदोलनजीवियों, यूट्यूबरों, रीलबाजों की जमात और अफवाह फैलाने वालों से भी निपटना पड़ता है।
आंदोलन इसलिए लोकतंत्र के लिए आवश्यक होते हैं, क्योंकि वे आक्रोशित या पीड़ित समूह के आक्रोश को निकालने का काम करते हैं। किसी ने सही ही कहा है कि आंदोलन प्रेशर कुकर जैसे होते हैं। लोग तार्किक और न्यायसंगत के साथ अतार्किक मांगों को लेकर भी आंदोलन कर सकते हैं। करते भी हैं। इसे रोका नहीं जा सकता। धरना–प्रदर्शन, रैली–सभा या आंदोलन के दौरान झूठे दावे करने पर भी कोई रोक नहीं। याद करें जब बोफोर्स तोप सौदे में दलाली का मामला गर्म था, तब वीपी सिंह जेब से एक पर्ची निकाल कर कहते थे कि इसमें दलालों के नाम हैं। वक्त आने पर बताएंगे। सीएए विरोधी आंदोलन के दौरान यह कुप्रचार किया गया कि इससे मुसलमानों की नागरिकता छीन ली जाएगी। कृषि कानून विरोधी आंदोलन के दौरान कथित किसान नेता कहते थे कि सरकार किसानों के खेत छीनकर अंबानी–अदाणी को दे देगी। राफेल सौदे में दलाली के अपने आरोप को पुख्ता करने के लिए राहुल गांधी दावा करते थे कि खुद मोदी ने दलाली खाने वाले की जेब में पैसा डाला है।
कई बार आंदोलनकारियों के पास कोई तार्किक मुद्दा होता है, पर वे आंदोलन के लिए अराजक तरीके अपनाना पसंद करते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि इससे ज्यादा से ज्यादा लोग तंग होंगे और इससे ही शासन–प्रशासन दबाव में आएगा। अब न्यायपालिका को भी दबाव में लेने का काम होने लगा है। बीते दिनों राहुल गांधी ने उस मामले में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से मिलने की इच्छा जताई, जिसकी कोर्ट सुनवाई कर रहा है। जब उन्हें बताया गया कि ऐसा नहीं हो सकता तो वे विपक्षी नेताओं के साथ सुप्रीम कोर्ट तक मार्च करते हुए गए और पुलिस को चकमा देकर याचिका देने का नया तरीका चुना। कुल मिलाकर धरना–प्रदर्शन के तरीके तेजी से बदल रहे हैं। इस क्रम में आंदोलन करने वाले पुलिस–प्रशासन के साथ आम लोगों के लिए कहीं अधिक परेशानी का कारण बन रहे हैं, क्योंकि अब आंदोलन के नाम पर कोई भी समूह कहीं भी, कभी भी सड़क पर हंगामा खड़ा कर सकता है। कोई नहीं जानता कि आंदोलनों का प्रोटोकाल कब बनेगा, जिसकी कुछ समय पूर्व सुप्रीम कोर्ट ने जरूरत जताई थी। यदि आंदोलनों की प्रकृति इसी तरह बदलने के साथ विकृत होती रही तो लोकतंत्र कितना सशक्त होगा, यह तो पता नहीं, लेकिन इसमें संदेह नहीं कि उनके आगे आम जनता खुद को और अधिक असहाय–निरुपाय महसूस करेगी और उसकी कोई नहीं सुनेगा।

भारत के भविष्य से खिलवाड़

लगता है कि भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने और लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई मोदी सरकार को अस्थिर करने की कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा पश्चिमी देशों और वैश्विक संस्थाओं के समक्ष की गई अपील अब असर दिखाने लगी है। एक के बाद एक चुनावों में भाजपा को हराने में नाकाम रहने वाले राहुल गांधी अंतरराष्ट्रीय मंचों पर यही राग अलापते रहे कि पश्चिमी देश भारत में श्लोकतंत्र की पुनर्स्थापनाश के लिए मदद नहीं कर रहे हैं। हालांकि अंतरराष्ट्रीय ताकतों से भारत के घरेलू मामलों में दखल देने की इस शर्मनाक अपील को उस समय कोई खास तवज्जो नहीं मिली थी, लेकिन अब ऐसा प्रतीत होता है कि पश्चिमी देशों और खुद भारत के भीतर सक्रिय शक्तियों के बीच साठगांठ मजबूत होती जा रही है। यह एक विचित्र दुर्योग है कि जब कांग्रेस ने देश में अराजकता को बढ़ावा देकर मोदी सरकार को अस्थिर करने की व्यापक मुहिम शुरू की, उसी दौरान संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त के कार्यालय ने भारत को लोकतांत्रिक मूल्यों एवं परंपराओं पर नसीहत देना शुरू कर दिया है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने उसे दो–टूक जवाब देकर बिल्कुल सही किया कि वह अपने काम से काम रखे। इतना ही नहीं, भारत ने इस एजेंसी को आईना भी दिखाया कि उसके पड़ोसियों पाकिस्तान और बांग्लादेश में लोगों के दमन पर उसने कैसे आंखें मूंदें रखीं। आखिर संयुक्त राष्ट्र की इस एजेंसी में दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को नसीहत देने की यह जुर्रत कहां से आई? इसके जिम्मेदार राहुल गांधी जैसे लोग ही हैं। राहुल गांधी की गैर–जिम्मेदाराना हरकतों की कोई सीमा नहीं रह गई है। इसी क्रम में वे दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति एलन मस्क की भारत विरोधी भावनाओं के साथ सुर मिलाते दिखे। अपनी सैटेलाइट इंटरनेट सेवा प्रदाता स्टारलिंक को भारत में लाइसेंस न मिलने पर तिलमिलाए मस्क ने जब अपने इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर झुंझलाहट दिखानी शुरू की तो राहुल उनके साथ हो लिए। इस मामले में वास्तविकता यह है कि मस्क की कंपनी भारत में नियमन के पैमानों को अभी तक पूरा नहीं कर पाई, लेकिन उन्होंने अपनी खीझ भारतीय उद्यमियों और सरकार पर उतारनी शुरू कर दी। इसमें राहुल उन्हें एक तरह से उकसाते नजर आए। इससे पहले डोनाल्ड ट्रंप ने भी जब भारतीय अर्थव्यवस्था को डेड इकोनमी बताया था तो राहुल ने उनसे सहमति जताने में देर नहीं लगाई थी, जबकि हकीकत यह है कि हाल में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर को लेकर अपना अनुमान और बढ़ाया है।

राष्ट्रीय हितों के आड़े न आए राजनीति

पिछले दिनों जब केरलम के विझिंजम बंदरगाह से निर्यात–आयात शुरू हुआ तो मुख्यमंत्री वीडी सतीशन ने इसे राज्य के लिए गर्व का क्षण बताते हुए कहा कि यह बंदरगाह दुनिया की ओर खुलने वाला द्वार है। खास बात यह है कि इस बंदरगाह का निर्माण अदाणी समूह ने किया है। यह भारत का गहरे समुद्र में बना ऐसा बंदरगाह है, जिसकी देश को वर्षों से रणनीतिक आवश्यकता थी। 1991 में तत्कालीन मुख्यमंत्री के. करुणाकरन ने विझिंजम में एक डीप–सी बंदरगाह की परिकल्पना की थी। हालांकि कुछ रिकार्ड कहते हैं कि 1940 में त्रावणकोर के दीवान सीपी रामास्वामी अय्यर ने यह विचार सुझाया था और इसके आधार पर सर्वेक्षण भी हुआ था। परिकल्पना 1940 की मानें या 1991 की, इतना तो स्पष्ट है कि लंबे समय तक यह परियोजना कागजों में ही रही। जब इसके आकार लेने की बात आई तो प्रश्न उठा कि विझिंजम का डीप–सी पोर्ट बनाएगा कौन, क्योंकि 1995, 2004, 2008 और 2010 में चार प्रयासों के बाद भी कोई कंपनी इसे बनाने का ठेका नहीं ले सकी। 2014 में इसे नए सिरे से तैयार करने की योजना बनाई गई और 2015 में अदाणी समूह के साथ इसे बनाने का समझौता हुआ। भारत में परियोजनाओं को धरातल पर लाने में अक्सर देरी होती ही है, लेकिन इस परियोजना में हुई देरी से देश को कितना नुकसान हुआ, इसकी कल्पना ही की जा सकती है। भारत अभी तक अपने कंटेनर ट्रैफिक का 75 प्रतिशत कोलंबो, सिंगापुर और दुबई के बंदरगाहों के जरिये लाता और भेजता है। अब विझिंजम बंदरगाह से निर्यात–आयात शुरू होने से भारत के जहाजों की विदेशी बंदरगाहों के उपयोग पर निर्भरता कम होगी। गहरे समुद्र में बने विझिंजम बंदरगाह की गहराई स्वाभाविक तौर पर बिना खोदाई किए 20 मीटर की है। इसे आसानी से ऐसे समझा जा सकता है कि जहां विझिंजम बंदरगाह है, वहां समुद्र में लगभग 9–10 मंजिला इमारत पानी के भीतर समा जाएगी। प्राकृतिक रूप से इतनी गहराई पर होने से विझिंजम बंदरगाह में नियमित रखरखाव की लागत भी कम रहेगी। गहराई में होने के कारण विझिंजम बंदरगाह बहुत बड़े जहाजों को भी समायोजित–संचालित करने की क्षमता रखता है। विश्व की बदलती रणनीतिक परिस्थितियों में आपूर्ति शृंखला बनाए रखने की चुनौती भारत जैसे विशाल देश के सामने बहुत बड़ी है। विश्व के सामने विझिंजम बंदरगाह भारत के मजबूत होते अंतरराष्ट्रीय समुद्री बुनियादी ढांचे का बड़ा प्रमाण है। विश्व के सर्वाधिक व्यस्ततम पूर्व–पश्चिम समुद्री मार्ग के निकट होने से विझिंजम बंदरगाह के जरिये भारत वैश्विक व्यापार के केंद्र में आ सकता है। इस बंदरगाह से निर्यात–आयात होने का सीधा लाभ देश के छोटे और मझोले उद्योगों को होगा। छोटे–मझोले उद्योगों के वैश्विक व्यापार में बने रहने के लिए सर्वाधिक आवश्यक होता है कि कम लागत में समय से उनका सामान पहुंचाया और मंगाया जा सके। विझिंजम बंदरगाह छोटे–मझोले उद्योगों के लिए यह करने जा रहा है। भारत के समुद्री उत्पादों, इंजीनियरिंग उत्पादों, काजू, मसाले, कपड़े को वैश्विक बाजार में पहुंचने में आसानी होगी। निर्यात के साथ हमारे देश की आयातक कंपनियों को भी इससे लाभ होगा। अंतरराष्ट्रीय कारोबार के साथ ही केरल के अलावा तमिलनाडु और कर्नाटक के उद्योगों को भी अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्ग से सीधे जुड़ने का लाभ होगा। बंदरगाह पर बड़े मालवाहक जहाजों की आवाजाही से इससे जुड़े ढेरों व्यापार बंदरगाह के आसपास विकसित होंगे। आत्मनिर्भर भारत की दिशा में यह बंदरगाह बड़ी भूमिका निभाएगा, लेकिन यह याद रहे कि भारत की स्वतंत्रता के पूर्व जिस गहरे समुद्री बंदरगाह की परिकल्पना की गई थी और उसका सर्वेक्षण भी हो गया था, उस पर काम 2015 में जाकर शुरू हो पाया और 2024 में जाकर पहला चरण पूरा हो पाया और उस दौरान भी राहुल गांधी अदाणी पर हमला जारी रखे हुए थे। जबकि जिस दौरान केरलम में यह बंदरगाह बन रहा था, तब राज्य में वामपंथी और कांग्रेसी सरकारें ही रहीं। विझिंजम बंदरगाह से निर्यात–आयात शुरू होते समय कांग्रेस की सरकार है और केरलम के मुख्यमंत्री वीडी सतीशन का यह कहना कि अब सबसे बड़ी चुनौती इस अवसर का अधिकतम लाभ उठाकर भारत और केरलम से दुनिया को जोड़ने और अर्थव्यवस्था को तेजी से आगे बढ़ाने की है, बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है और एक सबक भी दे जाता है कि राष्ट्रीय महत्व की परियोजनाओं में देरी और उस पर दलगत राजनीति से देश का नुकसान होता है और सभी दलों को इससे बचना चाहिए।

एक झलक











गोरखपुर विश्वविद्यालय–25 युवाओं के स्टार्टअप आइडिया चयनित

गोरखपुर,संवाददाता। गैलेंट ग्रुप के सीपी अग्रवाल ने कहा कि नवाचार और उद्यमिता युवाओं को नौकरी तलाशने वाले से नौकरी देने वाला बना सकते हैं। विद्यार्थियों को अपने विचारों को धरातल पर उतारने के लिए गंभीरता से प्रयास करना चाहिए। नए विचारों को नवाचार और उद्यमिता से जोड़कर रोजगार सृजन का माध्यम बनाने के लिए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने पहल की है। इनोवेशन डे पर संवाद भवन में इंस्टीट्यूशन इनोवेशन काउंसिल (आईआईसी) का उद्घाटन किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों ने अपने नए विचारों और स्टार्टअप की संभावनाओं से जुड़े आइडिया प्रस्तुत किए। शुरुआती छंटनी के बाद 25 युवाओं के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए चुना गया है।

चयनित युवाओं को 15 नवंबर को दोबारा प्रेजेंटेशन



देने का मौका मिलेगा। इसके बाद 15 दिसंबर को वे उद्यमियों के सामने अपने आइडिया प्रस्तुत करेंगे। चयनित विचारों को स्टार्टअप में बदलने के लिए 15 जनवरी तक फंड उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों के रचनात्मक विचारों को व्यावहारिक रूप देकर उद्यमिता को बढ़ावा देना है। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि नवाचार केवल नए विचारों तक सीमित नहीं है। विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मक क्षमता पहचानने, नए प्रयोग करने और अपने विचारों को व्यावहारिक उपयोगिता से जोड़ने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रयास युवाओं को नए अवसर तलाशने और रोजगार सृजन की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करेंगे।

मुख्य अतिथि गैलेंट ग्रुप के सीपी अग्रवाल ने कहा कि नवाचार और उद्यमिता युवाओं को नौकरी तलाशने वाले से नौकरी देने वाला बना सकते हैं। विद्यार्थियों को अपने विचारों को धरातल पर उतारने के लिए गंभीरता से प्रयास करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि अमित बथवाल ने कहा कि हर बड़ा स्टार्टअप एक छोटे विचार से शुरू होता है। सही दिशा और प्रयास से छोटे विचार भी बड़े उद्यम का रूप ले सकते हैं।

अगले साल से पूर्वांचल के मौसम का मिलेगा सटीक पूर्वानुमान

गोरखपुर,संवाददाता। पूर्वांचल में मौसम का मिजाज अक्सर तेजी से बदलता है। कभी अचानक बारिश होती है तो कभी बादल छाने के बावजूद बारिश नहीं होती। मौसम का यह बदलता रुख समझने के लिए सिर्फ तापमान और बारिश के आंकड़े पर्याप्त नहीं हैं। आसमान में बादल किस ऊंचाई पर हैं, उनकी कितनी परतें हैं और उनकी मौजूदगी में मौसम के साथ कितना बदलाव हो रहा है, यह जानना भी जरूरी है। पूर्वांचल में मानसून के बादल कितने ऊंचे हैं, आसमान में बादलों की कितनी परतें मौजूद हैं और बारिश कब होगी, इन सवालों के जवाब सटीक मिल सकेंगे। गोरखपुर विश्वविद्यालय में लगा सीलोमीटर आसमान की गतिविधियों की अच्छी तरह से निगरानी कर रहा है। इससे अगले वर्ष से मौसम का सटीक पूर्वानुमान मिलने लगेगा। उल्लेखनीय है कि सितंबर 2024 में गोरखपुर विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग में अहमदाबाद स्थित भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) की मदद से सीलोमीटर स्थापित किया गया था। उत्तर प्रदेश में इस तरह का यह पहला उपकरण है। लेजर किरणों से काम करने वाली यह मशीन सात किलोमीटर की ऊंचाई तक बादलों की गतिविधियों को दर्ज कर रही है।

खास बात यह है कि इससे पहली बार क्षेत्र में बादलों की ऊंचाई और उनकी परतों का लगातार वैद्यानिक रिकॉर्ड तैयार हो रहा है। सितंबर 2027 के बाद जुटाए गए आंकड़ों का उपयोग पूर्वानुमान में होने लगेगा। पूर्वांचल में मौसम का मिजाज अक्सर तेजी से बदलता है। मौसम का यह बदलता रुख समझने के लिए सिर्फ तापमान और बारिश के आंकड़े पर्याप्त नहीं साबित हो रहे हैं।

पूर्वांचल में मौसम का मिजाज अक्सर तेजी से बदलता है। कभी अचानक बारिश होती है तो कभी बादल छाने के बावजूद बारिश नहीं होती। मौसम का यह बदलता रुख समझने के लिए सिर्फ तापमान और बारिश के आंकड़े पर्याप्त नहीं हैं। आसमान में बादल किस ऊंचाई पर हैं, उनकी कितनी परतें हैं और उनकी मौजूदगी में मौसम के साथ कितना बदलाव हो रहा है, यह जानना भी जरूरी है। सीलोमीटर से मिलने वाले आंकड़े इसी कमी को दूर करने में मदद करेंगे। सीलोमीटर से मिलने वाले आंकड़े इसी कमी को दूर करने में



मदद करेंगे। सितंबर 2027 तक मिलने वाले आंकड़ों का विश्लेषण क्षेत्रीय मौसम की विशेषताओं को समझने और पूर्वानुमान में इस्तेमाल होने वाले मॉडलों को बेहतर बनाने का आधार तैयार करेगा।

लेजर किरणें बताती हैं बादलों की ऊंचाई

सीलोमीटर आसमान में लेजर किरणें भेजता है। ये किरणें बादलों में मौजूद पानी की छोटी बूंदों और बर्फ के कणों से टकराकर वापस लौटती हैं। मशीन यह मापती है कि प्रकाश को वापस आने में कितना समय लगा। इसी आधार पर पता चलता है कि बादल जमीन से कितनी ऊंचाई पर हैं। यह प्रक्रिया लगातार चलती रहती है, इसलिए आसमान में बादलों की स्थिति में होने वाले बदलाव भी दर्ज होते रहते हैं। अध्ययन के दौरान करीब 97 फीसदी आंकड़े उपलब्ध रहे। इनका मिलान उपग्रह से मिली तस्वीरों और मौसम का अनुमान लगाने वाले मॉडलों के आंकड़ों से भी किया जा रहा है।

अब तक सटीक स्थानीय आंकड़े नहीं थे उपलब्ध

गोरखपुर विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग में इस शोध परियोजना के प्रधान अन्वेषक प्रो. शांतनु रस्तोगी के मुताबिक, सीलोमीटर से मिलने वाले आंकड़े पूर्वी उत्तर प्रदेश के मौसम का पूर्वानुमान बेहतर बनाने में उपयोगी होंगे। अब तक क्षेत्र में बादलों की ऊंचाई और उनकी परतों से जुड़े स्थानीय आंकड़े पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं थे। परियोजना की निगरानी अहमदाबाद स्थित भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला के प्रो. सोम कुमार शर्मा भी कर रहे हैं। डॉ. प्रभु नाथ प्रसाद सह–प्रधान अन्वेषक और मीनाक्षी सिंह रिसर्च फेलो हैं।

महीनेभर में 850 रुपये प्रति क्विंटल महंगी हुई चीनी

गोरखपुर,संवाददाता। आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत चीनी डीलरों, व्यापारियों और थोक उपभोक्ताओं को प्रत्येक शुक्रवार भारत सरकार के ऑनलाइन पोर्टल पर अपने स्टॉक की जानकारी अपडेट करनी होगी। इसका उद्देश्य चीनी की उपलब्धता और भंडारण पर नजर रखना है। त्योहारों के बीच चीनी की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी से बाजार का जायका बिगड़ने लगा है। महीनेभर में चीनी के थोक भाव में 850 रुपये प्रति क्विंटल तक की बढ़ोतरी हुई है। सितंबर में 4,350 रुपये प्रति क्विंटल बिकने वाली चीनी अक्तूबर में 5,200 रुपये तक पहुंच गई है।

जमाखोरी की आशंका, स्टॉक का ब्योरा देना अनिवार्य

वहीं, मोटे दाने वाली चीनी का भाव 5,300 रुपये प्रति क्विंटल हो गया है। जमाखोरी की आशंका को देखते हुए सरकार ने स्टॉक का ब्योरा देना अनिवार्य कर दिया है। कीमतों में अचानक आई तेजी से बाजार में किल्लत और जमाखोरी की आशंका बढ़ गई है। हालांकि, उप गन्ना आयुक्त का कहना है कि मंडल में चीनी का पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध है।

मंडल में अभी 3.2 लाख क्विंटल चीनी का स्टॉक उपलब्ध

चीनी की उपलब्धता बनाए रखने और जमाखोरी पर अंकुश लगाने के लिए स्टॉक की निगरानी बढ़ा दी गई है। चीनी डीलरों, व्यापारियों और थोक उपभोक्ताओं को प्रत्येक शुक्रवार भारत सरकार के ऑनलाइन पोर्टल पर उपलब्ध स्टॉक का ब्योरा देना अनिवार्य किया गया है। गलत जानकारी देने या विवरण अपडेट नहीं करने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। उप गन्ना आयुक्त राजीव राय के अनुसार, मंडल में वर्तमान में करीब 3.2 लाख क्विंटल चीनी का स्टॉक उपलब्ध है। चीनी मिलों का नियमित निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश दिए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि बाजार में चीनी की उपलब्धता बनाए रखने और अनियमितताओं पर अंकुश लगाने के लिए निगरानी की जा रही है। व्यापारियों को अपने स्टॉक की सही जानकारी देनी होगी। ब्योरा नहीं देने या गलत जानकारी देने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

703 नगरीय निकायों को 1,034.76 करोड़ रुपये मंजूर, 16 नगर निगमों को 473.14 करोड़ मिले

लखनऊ,संवाददाता। यूपी सरकार ने नगर निगमों के लिए 473 करोड़ 14 लाख 62 हजार आठ रुपये, नगर पालिका परिषदों के लिए 358 करोड़ 24 लाख 82 हजार 806 रुपये और नगर पंचायतों के लिए 203 करोड़ 36 लाख 57 हजार 165 रुपये मंजूर किए गए हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार ने वित्तीय वर्ष 2026–27 में प्रदेश के 703 नगरीय निकायों के लिए 1034.76 करोड़ रुपये की धनराशि मंजूर की है। इसमें 16 नगर निगम, 185 नगर पालिका परिषद और 502 नगर पंचायतें शामिल हैं। यह धनराशि पांचवें राज्य वित्त आयोग की संस्तुतियों के तहत वर्ष 2022–23 से 2023–24 तक की वास्तविक प्राप्तियों के आधार पर स्वीकृत की गई है। स्थानीय निकाय निदेशालय ने इस संबंध में आदेश जारी कर दिए हैं।

आदेश के अनुसार नगर निगमों के लिए 473 करोड़ 14 लाख 62 हजार आठ रुपये, नगर पालिका परिषदों के लिए 358 करोड़ 24 लाख 82 हजार 806 रुपये और नगर पंचायतों के लिए 203 करोड़ 36 लाख 57 हजार 165 रुपये मंजूर किए गए हैं। इस तरह तीनों श्रेणियों की धनराशि जोड़ने पर कुल 1,034 करोड़ 76 लाख 1 हजार 979 रुपये होते हैं। यानी करीब 1,034.76 करोड़ रुपये की मंजूरी दी गई है।

इस आवंटन में नगर निगमों का हिस्सा सबसे अधिक है। उन्हें कुल स्वीकृत राशि का लगभग 45.72 प्रतिशत मिलेगा। नगर पालिका परिषदों को करीब 34.62 प्रतिशत और नगर पंचायतों को लगभग 19.65 प्रतिशत धनराशि आवंटित की गई है।

लखनऊ को सबसे ज्यादा, शाहजहांपुर को सबसे कम

नगर निगमों की सूची में लखनऊ को 77.10 करोड़ रुपये की मंजूरी दी गई है। इसके बाद कानपुर नगर को 65.15 करोड़ और वाराणसी को 48.44 करोड़ रुपये मिलेंगे।

गाजियाबाद और प्रयागराज भी बड़े आवंटन वाले नगर निगमों में शामिल हैं। वहीं, शाहजहांपुर नगर निगम के लिए 8.74 करोड़ रुपये निर्धारित किए गए हैं।

सीएम योगी बोले– प्रयागराज की धूमिल छवि बदली

माफिया पर कार्रवाई से विकसित हुआ बेहतर माहौल

प्रयागराज,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रयागराज आस्था, शिक्षा और न्याय की धरती है। कभी माफिया के कारण इसकी छवि धूमिल हो गई थी, लेकिन प्रदेश सरकार ने कानून–व्यवस्था में सुधार के साथ विकास को नई गति दी है। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार में युवाओं को सरकारी नौकरियां मिलीं और प्रयागराज ने भव्य महाकुंभ के आयोजन से दुनिया में अपनी पहचान मजबूत की।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज के एक चुनावी सम्मेलन में समाजवादी पार्टी (सपा) की पूर्ववर्ती सरकारों पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि पिछली सरकारों के दौर में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जाता था। उन्होंने कहा कि उस समय न तो समय पर नौकरियां निकलती थीं और यदि विज्ञापन आ भी जाते थे, तो वसूली का दौर शुरू हो जाता था। अयोग्य लोगों को आयोगों में महत्वपूर्ण पदों पर बैठाकर युवाओं के अधिकारों पर डाका डाला गया, लेकिन डबल इंजन की सरकार ने पूरी पारदर्शिता, निष्पक्षता और योग्यता के आधार पर युवाओं को नौकरियां प्रदान की हैं। मुख्यमंत्री ने जोर देकर कहा कि आज प्रयागराज के युवा और प्रतियोगी छात्र पूरी मुस्तैदी और मेहनत के साथ विभिन्न परीक्षाओं की तैयारी में जुटे हैं। डबल इंजन सरकार के कार्यकाल में पारदर्शी चयन प्रक्रियाओं के जरिए बड़े पैमाने पर युवाओं को सरकारी नौकरियां दी गई हैं, जिससे युवाओं का आत्मविश्वास काफी बढ़ा है। उन्होंने कहा कि आज का युवा केवल जॉब सीकर नहीं रहा, बल्कि विभिन्न स्टार्टअप्स के माध्यम से वह जॉब गिवर भी बन रहा है।



गवर्नमेंट प्रेस मैदान में आयोजित मतदाता सम्मेलन में सीएम योगी को गदा भेंट की गई

डबल इंजन की सरकार ने माफिया को मिट्टी में मिलाया

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि जिन लोगों ने प्रयागराज और प्रदेश के सामने पहचान का संकट खड़ा किया था, डबल इंजन सरकार ने उन्हें पूरी तरह से नेस्तनाबूद कर दिया है। आज प्रयागराज की धरती पर माफिया मिट्टी में मिल चुके हैं। उन्होंने कहा कि जब यूपीएससी के परिणाम आते हैं, तो प्रयागराज की बेटियां टॉप करके इस पावन नगरी के गौरव को और अधिक बढ़ाती हैं। सरकार ने युवाओं के लिए न केवल सरकारी नौकरियों के द्वार खोले हैं, बल्कि स्टार्टअप्स और मुख्यमंत्री युवा योजना के जरिए उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का भी काम किया है। संबोधन के दौरान मुख्यमंत्री ने इलाहाबाद–झांसी खंड स्नातक विधान परिषद चुनाव में भारतीय जनता पार्टी और एनडीए समर्थित प्रत्याशी अशोक राठौर को भारी मतों से विजयी बनाने की अपील की। उन्होंने मतदाताओं से आह्वान किया कि वे 23 अक्तूबर को होने वाले मतदान में बढ़–चढ़कर हिस्सा लें और भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में अपना मत दें।

इस कार्यक्रम में उप–मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, प्रभारी मंत्री स्वतंत्र देव सिंह, औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी, राज्य मंत्री कृष्णा पासवान, सांसद प्रवीण पटेल, राज्यसभा सांसद राधामोहन दास ओझा, महापौर गणेश केसरवानी, जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. वी.के. सिंह और विधान परिषद सदस्य मानवेंद्र सिंह सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

महापुरुषों को सम्मान देने पर जोर

मुख्यमंत्री ने स्वतंत्रता सेनानियों और महापुरुषों के योगदान को याद करते हुए कहा कि उनके सम्मान और स्मृति को बनाए रखना आवश्यक है। उन्होंने पंडित जवाहरलाल नेहरू के नाम पर संस्थानों के निर्माण का उल्लेख करते हुए कहा कि देश के इतिहास में अन्य महापुरुषों के योगदान को भी उचित स्थान मिलना चाहिए। उन्होंने प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं का जिक्र करते हुए कहा कि पात्र परिवारों को पांच लाख रुपये तक की कैशलेस चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

राधाकांत ओझा के समर्थन में अधिवक्ताओं का उत्साह

कार्यक्रम में राधाकांत ओझा के राज्यसभा सदस्य बनने के संदर्भ में अधिवक्ताओं के उत्साह का भी उल्लेख किया गया। कहा गया कि बड़ी संख्या में अधिवक्ता इस उपलब्धि से प्रसन्न हैं। कार्यक्रम में अधिवक्ता समुदाय की भागीदारी को प्रयागराज की न्यायिक और विधिक परंपरा से जोड़कर देखा गया।

दिव्या मित्तल ने नई पार्टी 'जननीति भारत'

2027 का यूपी चुनाव लड़ेगी पार्टी

मिर्जापुर। पूर्व आईएएस अधिकारी दिव्या मित्तल ने अपनी नई पार्टी बनाने की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि पार्टी के तीन प्रमुख वचन होंगे। जनता की भागीदारी, जरूरत के आधार पर फैसले और जवाबदेही। पूर्व आईएएस अधिकारी दिव्या मित्तल ने अपनी राजनीतिक पारी को लेकर बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने 'जननीति भारत' नाम से नई राजनीतिक पार्टी बनाने की घोषणा की है। यह पार्टी उत्तर प्रदेश में 2027 का विधानसभा चुनाव लड़ेगी। दिव्या मित्तल ने कहा कि समस्या राजनीति की कमी नहीं, बल्कि लोगों की सुनवाई नहीं होने की है। उन्होंने जनता की भागीदारी, जरूरत के आधार पर फैसले और जवाबदेही को अपनी राजनीतिक सोच का आधार बताया। वीडियो संदेश में दिव्या मित्तल ने बताया कि पिछली बार राजनीति में आने की बात कहने के बाद उन्होंने लोगों से संपर्क के लिए एक नंबर साझा किया था। इस पर इतने संदेश आए कि व्हाट्सएप ने नंबर को रोक दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें इतने बड़े पैमाने पर लोगों की प्रतिक्रिया मिलने की उम्मीद नहीं थी। इसकी समुचित व्यवस्था नहीं कर पाने के कारण लोगों को हुई असुविधा के लिए उन्होंने माफी भी मांगी। लोगों की प्रतिक्रिया का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसा महसूस हुआ, जैसे वह सूरज के सामने दिया लेकर खड़ी हों, जबकि उन्हें सिर्फ खिड़की खोलनी थी। उनके इस कथन के जरिए जनता की भागीदारी और समर्थन को लेकर अपने अनुभव को साझा किया।

तीन वचनों पर आधारित होगी पार्टी

दिव्या मित्तल ने 'जननीति भारत' के तीन प्रमुख वचन बताए। पहला, देश की नीतियों के केंद्र में जनता होगी और नीतियां लोगों की भागीदारी से तय की जाएंगी। दूसरा, फैसले किसी की पहचान के आधार पर नहीं, बल्कि जरूरत के अनुसार लिए जाएंगे। तीसरा, हर काम के लिए जनता के प्रति जवाबदेही तय होगी और उसके आधार पर सुधार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पार्टी का उद्देश्य ऐसी व्यवस्था बनाना है, जिसमें सरकार जनता की जरूरतों और अपेक्षाओं के अनुरूप काम करे। वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव में उतरने की घोषणा के साथ उन्होंने अपनी राजनीतिक दिशा भी स्पष्ट की है।

कसारी–मसारी की पहचान को मिटाएगी योगी सरकार

अतीक का गढ़ कृष्ण पुरी के नाम से जाना जाएगा, सीएम का एलान

प्रयागराज,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने माफिया अतीक अहमद के कब्जे से मुक्त कराई गई जमीन पर पद्म लोक आवास योजना के लिए भूमि पूजन किया। सभा को संबोधित करते हुए योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अब यह क्षेत्र कसारी मसारी के नाम से नहीं बल्कि कृष्ण पुरी के नाम से जाना जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने माफिया अतीक अहमद के कब्जे से मुक्त कराई गई जमीन पर पद्म लोक आवास योजना के लिए भूमि पूजन किया। सभा को संबोधित करते हुए योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अब यह क्षेत्र कसारी मसारी के नाम से नहीं बल्कि कृष्ण पुरी के नाम से जाना जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रयागराज में अब कोई भी माफियागिरी का दुस्साहस नहीं करेगा। अगर करेगा तो मिट्टी में मिला दिया जाएगा और वह अपनी बाप–दादा की संपत्ति भी गंवाएगा।



उन्होंने कहा कि एक साल में यहां करीब 1200 परिवार यानी 6500 लोगों का निवास इस 10 बीघे के कैंपस में होगा। उनके लिए यहां अलग से टाउनशिप बनेगी। मार्केट भी बनेगा। स्पोर्ट्स पार्क और जिम की सुविधा भी मिलेगी। उनकी जो भी जरूरत होगी वह प्रयागराज विकास प्राधिकरण यहां पर मुहैया कराएगा। पहले की सरकारों ने यूपी में पहचान का संकट खड़ा हो गया था। पहले लोग यूपी का नाम सुनने के बाद 100 मीटर दूर भागते थे, लेकिन अब स्थिति बदल गई है। यूपी वालों का नाम सुनकर लोग पास आते हैं। महाकुंभ के चलते सड़कें चौड़ी हुई हैं। पहले कसारी मसारी और चकिया इलाके में कोई घुसने का प्रयास नहीं करता था। सामान्य व्यक्ति की तो बात दूर है पुलिस की गाड़ी तक नहीं आती थी, लेकिन अब स्थिति बदल गई है। कहा कि अब कोई भी माफियागिरी नहीं करेगा। करेगा तो बाप और दादा की संपत्ति भी गंवाएगा।

मुस्कान–साहिल को फांसी

स्टेटस पर बर्फ–पहाड़ों के फोटो देख गुमराह होते रहे सौरभ के परिजन, एक शब्द से खुला राज

मेरठ,संवाददाता। सौरभ राजपूत हत्याकांड में भाई राहुल के मुताबिक, सौरभ के लापता होने के दौरान उसके व्हाट्सएप स्टेटस पर पहाड़ों और बर्फ की तस्वीरें अपडेट की जाती रहीं। सीमेंट से भरे नीले ड्रम की जांच में भी पुलिस को शुरुआती उलझन हुई थी। सौरभ राजपूत हत्याकांड में अदालत ने मुस्कान और उसके प्रेमी को फांसी की सजा सुनाई है। हत्याकांड की जांच के दौरान पुलिस के सामने कई ऐसे तथ्य आए, जिन्होंने मामले की गुत्थी सुलझाने में अहम भूमिका निभाई। सौरभ के लापता होने के बाद उनके मोबाइल से व्हाट्सएप स्टेटस अपडेट किए जाते रहे, ताकि परिवार गुमराह होता रहे। जबकि परिवार बेटे के साथ अनहोनी के शक में उसकी तलाश में जुटा था।

सौरभ के भाई राहुल उर्फ बबलू के मुताबिक, स्टेटस पर पहाड़ों और बर्फ की तस्वीरें तो दिखाई देती थीं, लेकिन उनमें सौरभ खुद नजर नहीं आते थे। इसी बात से उन्हें संदेह हुआ। पुलिस की जांच में मोबाइल फोन, मुस्कान और साहिल से पूछताछ, घर में मिली परिस्थितियों और बयानों के आधार पर मामले की कड़ियां जुड़ती गईं। तत्कालीन ब्रह्मपुरी थाना



प्रभारी रमाकांत पचौरी के अनुसार, शुरुआत में दोनों ने पुलिस को गुमराह करने का प्रयास किया था। बाद में पूछताछ में सौरभ की हत्या और शव छिपाने से संबंधित जानकारी सामने आई।

सौरभ के मोबाइल से अपडेट होते रहे व्हाट्सएप स्टेटस

सौरभ के भाई राहुल उर्फ बबलू ने बताया कि उनका भाई 7 मार्च 2025 से लापता था। इस दौरान मुस्कान सौरभ का मोबाइल अपने पास लेकर प्रेमी साहिल के साथ हिमाचल प्रदेश के कसोल चली गई थी। राहुल के मुताबिक, सौरभ के मोबाइल से मुस्कान पहाड़ों और बर्फ की तस्वीरें व्हाट्सएप स्टेटस पर लगा रही थी, ताकि परिवार को लगे कि सौरभ कहीं घूमने गया है और सुरक्षित है। भाई ने बताया कि हम उस वक्त यही सोचते कि मुस्कान और सौरभ साथ ही घूम रहे हैं। राहुल के अनुसार स्टेटस पर सौरभ की खुद की कोई तस्वीर नहीं होती थी। इसी बात ने राहुल का संदेह बढ़ाया। बाद में पुलिस ने मुस्कान के पास से ही सौरभ का मोबाइल बरामद किया। राहुल के अनुसार, मोबाइल की गैलरी में मुस्कान की सौरभ के साथ कसोल की कई तस्वीरें और वीडियो भी मिले।

एक झलक


बाढ़ पीड़ितों से लखनऊ में मिले राजनाथ सिंह




पुरनिया, लखनऊ


पूर्व भारतीय क्रिकेटर सुरेश रैना ने काशी विश्वनाथ धाम में लिया बाबा का आशीर्वाद


सैफाई में नेता जी मूर्ति पर माला चढ़ाती डिम्पल यादव

पिंजरे में कैद हुआ तेंदुआ

कतर्नियाघाट में पिंजरे में कैद हुआ तेंदुआ, ग्रामीणों ने ली राहत की सांस, बच्चे को उतारा था मौत के घाट



गोरखपुर,संवाददाता । बिछिया बहराइच कतर्नियाघाट वन्य प्रभाग के कतर्नियाघाट रेंज अंतर्गत पिछले माह 7 सितंबर 2026 को आनंद नगर बड़खड़िया निवासी राजवीर पुत्र राजू की तेंदुए के हमले में मौत हो गई थी।

घटना के बाद से गांव में दहशत का माहौल था और ग्रामीणों में वन विभाग के खिलाफ काफी आक्रोश था। ग्रामीणों की मांग पर वन विभाग ने गांव के पास पिंजरा लगाया था।

बृहस्पतिवार रात करीब 11रू30 बजे तेंदुआ पिंजरे में कैद हो गया। तेंदुए के पकड़े जाने की सूचना मिलते ही ग्रामीणों ने राहत की सांस ली। इसी बीच तेन्दुए ने कई मवेशीयों को शिकार भी कर रहा था। जिससे ग्रामीण काफी दहशत मे थे। सूचना पर रेंजर आशीष गौड़ के नेतृत्व में डिप्टी रेंजर मयंक पांडे, वन दरोगा राधेश्याम, वन रक्षक कौशल किशोर व अन्य टीम मौके पर पहुंची और तेंदुए को सुरक्षित रेंज कार्यालय लाया गया।

रेंजर आशीष गौड़ ने बताया कि डीएफओ के आदेश के बाद स्वास्थ्य परीक्षण कराकर तय किया जाएगा कि तेंदुए को कहां छोड़ा जाएगा।

पदक लाओ, पद पाओ' के तहत खिलाड़ियों की सीधी भर्तीः सीएम योगी

सीएम योगी बोले– पहले बेटियों के सपनों पर पहरे थे



लखनऊ,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 2017 से पहले बेटियों के सपनों पर पहरे थे। हौसलों पर बंदिशें थीं और अवसर के अभाव में प्रतिभा दम तोड़ देती थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेशवासियों को शारदीय नवरात्रि की षष्ठी तिथि की बधाई दी। उन्होंने कहा कि समस्त बाधाओं और आसुरी प्रवृत्तियों का संहार करने वाली मां कात्यायनी नारीशक्ति के अदम्य साहस, अटूट संकल्प और अजेय पराक्रम का प्रतीक हैं। मुख्यमंत्री ने आस्था, विकास व विरासत के जरिए राज्य में आए बदलाव से अवगत कराते हुए कहा कि प्रदेश में अब 'पदक लाओ, पद पाओ' के तहत खिलाड़ियों की सीधी भर्ती हो रही है।

2017 से पहले चारदीवारी में कैद थे बेटियों के सपने

मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया अकाउंट श्एक्सश पर पोस्ट कर पिछली सरकार के कार्यकाल पर निशाना साधा। कहा कि वर्ष 2017 से पहले प्रदेश में भय और अराजकता का ऐसा माहौल था, जहां बेटियों के सपनों पर पहरे थे, हौसलों पर बंदिशें थीं और प्रतिभा अवसर के अभाव में दम तोड़ने को मजबूर थी। खेल के मैदान माफिया के कब्जे में थे, संसाधन नदारद थे और बेटियों की उड़ान को पंख देने के बजाय, उनके सपनों को चारदीवारी में कैद कर दिया गया था।

अब सुरक्षा, प्रोत्साहन से लिखी जा रही बदलाव की नई गाथा

मुख्यमंत्री ने 2017 के बाद आए बदलाव को भी इंगित किया। कहा कि विगत साढ़े 9 वर्षों में प्रदेश में बदलाव की नई गाथा लिखी गई है। भय का स्थान सुरक्षा ने लिया है, उपेक्षा का स्थान प्रोत्साहन ने लिया है और संसाधनों के अभाव का स्थान खेल सुविधाओं के विस्तार ने लिया है। गांव के खेल मैदानों और ब्लॉक स्तरीय मिनी स्टेडियम से लेकर जिला स्तरीय स्टेडियम, मंडल स्तरीय स्पोर्ट्स कॉलेज तथा मेरठ में मेजर ध्यानचंद खेल विश्वविद्यालय तक, बेटियों को अपनी प्रतिभा निखारने का सशक्त आधार मिल रहा है।

प्रतिभा को प्रोत्साहन, उपलब्धियों को सम्मान और भविष्य को सुरक्षा

मुख्यमंत्री ने बताया कि ओलंपिक, कॉमनवेल्थ एवं एशियन गेम्स के पदक विजेताओं को लाखों–करोड़ों के पुरस्कार और 'पदक लाओ, पद पाओ' के तहत सीधी भर्ती जैसी सुविधाएं दी जा रही हैं। सरकार खिलाड़ियों की प्रतिभा को प्रोत्साहन, उपलब्धियों को सम्मान और भविष्य को सुरक्षा प्रदान कर रही है। इस परिवर्तन की गूंज अंतरराष्ट्रीय खेल मंचों पर भी सुनाई दे रही है। एथलेटिक्स में पारुल चौधरी, प्रियंका गोस्वामी, प्राची चौधरी और अन्नू रानी, जूडो में अस्मिता डे, क्रिकेट में दीप्ति शर्मा और मेघना सिंह, हॉकी में वंदना कटारिया, कुश्ती में दिव्या काकरान ने कॉमनवेल्थ एवं एशियन गेम्स में शानदार प्रदर्शन से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश और प्रदेश का गौरव बढ़ाया है।

अजब प्रेम की गजब कहानी

75 साल के बुजुर्ग पर आया 30 साल की इंस्टाग्राम ब्लागर का दिल, हुई सगाई

औरैया,संवाददाता। औरैया की चर्चित ब्लॉगर रानी राजपूत और सहार के 75 वर्षीय रामसुगर की प्रेम कहानी की चर्चा जोरों पर है। दोनों ने सगाई कर ली है। प्यार उम्र की सरहदों और फासलों को नहीं देखता, इस बात को सच साबित करती एक अनोखी प्रेम कहानी औरैया और सहार क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई है। यहां सहार ब्लॉक के अरियारी गांव के रहने वाले 75 वर्षीय वृद्ध रामसुगर को औरैया की रहने वाली 30 वर्षीय चर्चित इंस्टाग्राम ब्लॉगर रानी राजपूत से मोहब्बत हो गई। उम्र के इस पड़ाव पर परवान चढ़े प्यार को अब दोनों ने शादी के बंधन में तब्दील करने का फैसला कर लिया है।

वृद्ध रामसुगर ने बताया कि रानी राजपूत का उनके घर पिछले दो वर्षों से लगातार आना–जाना था। रामसुगर की पुत्री राधा खुद एक यूट्यूबर है और रानी उनके घर अक्सर वीडियो शूट करने आती थीं। राधा के साथ वीडियो शूटिंग के दौरान ही रानी का रामसुगर के घर आना–जाना बढ़ा और धीरे–धीरे मुलाकातों का यह सिलसिला प्यार में बदल गया। करीब सात वर्ष पूर्व रामसुगर की पत्नी का निधन हो चुका है इसके बाद अब उन्हें अपना हमसफर रानी राजपूत के रूप में नजर आया है।



रामसुगर व होने वाली पत्नी रीना राजपूत

बेटी राधा ने जानकारी देते हुए बताया कि करीब एक सप्ताह पूर्व औरैया के एक ब्यूटी पार्लर में उनके पिता रामसुगर और इंस्टाग्राम ब्लॉगर रानी राजपूत की सगाई हुई। इस सगाई का वीडियो जैसे ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर अपलोड हुआ वह तेजी से वायरल हो गया। वीडियो सामने आने के बाद से ही पूरे क्षेत्र में इस अनोखी शादी की चर्चाएं जोरों पर हैं। परिजन के अनुसार इस रिश्ते को आधिकारिक रूप से आगे बढ़ाते हुए जल्द ही दोनों पूरे रीति–रिवाज और परंपराओं के साथ विवाह के बंधन में बंधेंगे।शादी की सभी रस्में और तैयारियां जोर–शोर से शुरू कर दी गई हैं। जहां एक ओर इस रिश्ते को लेकर तरह–तरह की चर्चाएं हैं, वहीं परिवार की सहमति और दोनों की रजामंदी से होने वाली यह शादी अब इलाके में चर्चा का सबसे बड़ा केंद्र बन गई है।

कातिल पत्नियों को मृत्युदंड

जेल में मुस्कान–रविता की उड़ी नींद, अब करेंगी हाईकोर्ट का रुख, की ये गुजारिश



मेरठ,संवाददाता। मेरठ में मृत्युदंड की सजा पाने वाली मुस्कान और रविता हाईकोर्ट में केस लड़ेंगी। वरिष्ठ जेल अधीक्षक के अनुसार, दोनों ने निजी वकील के लिए आवेदन किया है। रविता और अमरदीप को कैदी नंबर भी आवंटित किए गए हैं। मृत्युदंड की सजा के बाद मुस्कान और रविता की जेल में बैचेनी बढ़ गई है। दोनों को अलग अलग मामलों में अदालत ने फांसी की सजा सुनाई है। वहीं फैसला सुनते ही जहां मुस्कान फूट फूटकर रो पड़ी, उसके दो ही दिन बाद जब शुक्रवार को अदालत ने पति को सांप से डसवाने वाली पत्नी को मृत्युदंड सुनाया तो वह पहले तो चुप्पी साधे रही फिर सिर पकड़कर बैठ गईं। बाद में जेलकर्मी उसे बैरक तक ले गए।

दोनों ने की निजी वकील की मांग

दोनों जेल के भीतर अब एक ही चिंता सता रही है कि आगे क्या होगा? दोनों ने हाईकोर्ट में कानूनी लड़ाई लड़ने के लिए निजी वकील की मांग की है। वरिष्ठ जेल अधीक्षक डॉ. वीरेश राज शर्मा के अनुसार, दोनों को जल्द निजी वकील मुहैया कराने की प्रक्रिया की जाएगी। रविता को कैदी नंबर 399 और अमरदीप को 400 नंबर आवंटित किया गया है।

निचली अदालत के फैसले को दोनों हाईकोर्ट में देंगी चुनौती

मृत्युदंड की सजा सुनाए जाने के बाद दोनों मामलों में आगे की कानूनी कार्रवाई अहम हो गई है। हाईकोर्ट में अपील के जरिए दोनों दोषी निचली अदालत के फैसले को चुनौती दे सकेंगी। हालांकि, अपील में आगे क्या निर्णय होगा, यह अदालत की सुनवाई और आदेश पर निर्भर करेगा।

रविता को कैदी नंबर 399, अमरदीप को 400

जेल प्रशासन के अनुसार, रविता को कैदी नंबर 399 और अमरदीप को कैदी नंबर 400 आवंटित किया गया है। दोनों को अदालत से मृत्युदंड की सजा सुनाए जाने के बाद जेल में उनकी आगे की प्रक्रिया नियमानुसार जारी है। वरिष्ठ जेल अधीक्षक डॉ. वीरेश राज शर्मा ने बताया कि मुस्कान और रविता ने हाईकोर्ट में केस लड़ने के लिए निजी वकील की मांग की है। जेल प्रशासन की ओर से उन्हें वकील उपलब्ध कराने की कार्रवाई की जाएगी। वहीं मुस्कान ने बेटी से मिलने के लिए पत्र लिखने की भी बात कही है।

मृत्युदंड के बाद अब कानूनी लड़ाई पर नजर

मुस्कान और रविता के मामलों में सजा सुनाए जाने के बाद अब आगे की कानूनी प्रक्रिया पर नजर रहेगी। दोनों हाईकोर्ट में अपील के जरिए अपनी सजा को चुनौती देने की तैयारी कर रही हैं। अपील दाखिल होने के बाद संबंधित अदालत में मामले की सुनवाई होगी और कानून के अनुसार आगे का फैसला लिया जाएगा।

जेल में मुस्कान करेगी सिलाई का काम

जेल में दोषियों को काम करने के विकल्प भी दिए जाते हैं। मुस्कान ने पहले से ही जेल में सिलाई कढ़ाई के काम करती रही है, इसलिए उसने सिलाई कढ़ाई का काम चुना है, जबकि उसके जुर्म का साझीदार साहिल खेती–किसानी के काम कर रहा है।

रविता और अमरदीप ने भी चुने काम

पति को सांप से डसवाने वाली रविता और उसके प्रेमी को भी मृत्युदंड की सजा सुनाई गई है। जेल में दोनों ने अपने काम चुन लिए हैं। रविता ने बैग बनाने का काम चुना है, जबकि अमरदीप ने रंगाई–पुताई का काम चुना है।

मायावती बोलीं– 2007 में भी पार्टी को कम करके आंका गया था

बीएसपी के खिलाफ फेक सर्वे का प्रचार हो रहा



लखनऊ,संवाददाता। मायावती ने आरोप लगाया कि आगामी विधानसभा चुनावों से पहले बीएसपी के खिलाफ भ्रामक सर्वेक्षणों का प्रचार किया जा रहा है। उन्होंने 2007 के चुनाव का उदाहरण देते हुए कार्यकर्ताओं से दुष्प्रचार से सावधान रहने और जमीनी तैयारी तेज करने की अपील की। पार्टी उत्तर प्रदेश में पांचवीं बार सरकार बनाने का लक्ष्य लेकर चल रही है।

बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर मीडिया और सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रहे सर्वेक्षणों पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि जातिवादी मीडिया और सोशल मीडिया के जरिए धनबल का दुरुपयोग कर पार्टी के खिलाफ फर्जी और ध्यान भटकाने वाले सर्वे का प्रचार किया जा रहा है। मायावती ने कहा कि उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और पंजाब में होने वाले आगामी विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी अच्छे और दमदार उम्मीदवारों के चयन के साथ जमीनी तैयारियों में जुटी है। इसी बीच बीएसपी को निशाना बनाकर कथित तौर पर भ्रामक सर्वेक्षणों का प्रचार किया जा रहा है, जो दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है।

2007 के चुनाव का दिया उदाहरण

मायावती ने आरोप लगाया कि चुनाव के दौरान बीएसपी के खिलाफ मिथ्या प्रचार किया जाता रहा है और प्रायोजित सर्वेक्षणों में पार्टी की स्थिति को कम करके आंका जाता है। उन्होंने वर्ष 2007 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव का उदाहरण देते हुए कहा कि उस समय भी पार्टी को लेकर ऐसे ही कयास लगाए जा रहे थे, लेकिन बीएसपी ने पूर्ण बहुमत से सरकार बनाई थी। उन्होंने कहा कि उस सरकार के दौरान कानून का राज स्थापित करने और 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' की भावना के अनुरूप काम करने पर जोर दिया गया था।

समर्थकों से दुष्प्रचार से सावधान रहने की अपील

बीएसपी प्रमुख ने उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और भाजपा की सरकारों से असंतुष्ट लोगों, खासकर बहुजन समाज के लोगों से विरोधी दलों और अन्य तत्वों के कथित दुष्प्रचार से सावधान रहने की अपील की। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों से चुनावी तैयारियों में पूरी ताकत से जुटने का आह्वान किया। मायावती ने कहा कि पार्टी का लक्ष्य उनके नेतृत्व में पांचवीं बार उत्तर प्रदेश में बीएसपी की सरकार बनाना है। इसके लिए उम्मीदवारों के चयन और जमीनी स्तर पर संगठन को मजबूत करने पर ध्यान दिया जा रहा है।

अखिलेश के भाजपा से 12 सवाल

बोले– बैंक मजबूत हुए तो फिर बेचे क्यों जा रहे, जनता का पैसा कहां जा रहा



लखनऊ,संवाददाता। अखिलेश यादव ने बैंकिंग व्यवस्था को लेकर भाजपा से बारह सवाल पूछे। उन्होंने बैंक शाखाओं और एटीएम बंद होने, खातों से कटौती, साइबर ठगी, महंगे कर्ज और बैंक कर्मचारियों की कमी पर सवाल उठाए। उन्होंने ग्रामीण बैंकिंग सुविधाओं, किसानों को ऋण और बुजुर्गों की डिजिटल सुरक्षा के मुद्दे भी उठाए।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट कर भाजपा पर तंज कसा है। उन्होंने 'बारह साल, बारह सवाल' शीर्षक से बैंकिंग व्यवस्था को लेकर 12 सवाल उठाए। अखिलेश ने बैंकों की मजबूती के दावों के बीच बैंक शाखाओं और एटीएम बंद होने, ग्राहकों के खातों से कटौती, साइबर ठगी और कर्ज से जुड़ी समस्याओं पर सवाल किए।

अखिलेश यादव ने पूछा कि अगर बैंक मजबूत हुए हैं तो उन्हें बेचा क्यों जा रहा है और गरीब जनता के खातों से पैसे क्यों काटे जा रहे हैं? उन्होंने केवाईसी के नाम पर ग्राहकों को परेशान किए जाने और बैंकों से भारी कर्ज लेकर विदेश भागने वालों को वापस लाकर सजा दिलाने में हो रही देरी पर भी सवाल उठाए।

ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाओं का मुद्दा उठाया

सपा प्रमुख ने ग्रामीण इलाकों में बैंक शाखाएं और एटीएम बंद किए जाने पर सवाल करते हुए कहा कि इससे लोगों को नकदी के लिए भटकना पड़ता है। उन्होंने किसानों, छात्रों और छोटे दुकानदारों को बिना बिचौलिये और गारंटर के कर्ज मिलने में आने वाली मुश्किलों का मुद्दा भी उठाया।

साइबर ठगी और महंगे लोन पर सवाल

अखिलेश यादव ने साइबर ठगी का शिकार हुए लोगों को पैसा वापस मिलने में देरी और बैंक व थानों के चक्कर लगाने की परेशानी का जिक्र किया। उन्होंने होम लोन और शिक्षा ऋण पर ब्याज दरों को लेकर भी सवाल उठाए। इसके अलावा डिजिटल लेनदेन विफल होने पर ग्राहकों का पैसा कई दिनों तक अटके रहने और सिबिल स्कोर में छोटी चूक के कारण युवाओं को कर्ज लेने में होने वाली दिक्कतों पर सवाल किया।

बुजुर्गों की मदद और बैंक कर्मचारियों की भर्ती का मुद्दा

अखिलेश ने पूछा कि बुजुर्गों और कम पढ़े–लिखे लोगों को यूपीआई और ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाने के लिए हर बैंक शाखा में सहायता काउंटर क्यों नहीं हैं। उन्होंने बैंक कर्मचारियों की मांगें पूरी न होने, नई भर्तियां नहीं होने और मौजूदा कर्मचारियों पर बढ़ते काम के दबाव का मुद्दा भी उठाया।

सपा अध्यक्ष के इन 12 सवालों के केंद्र में बैंकिंग सेवाओं की उपलब्धता, ग्राहकों की सुरक्षा, कर्ज की सुविधा और कर्मचारियों की स्थिति जैसे मुद्दे रहे। उनकी पोस्ट में बैंकिंग व्यवस्था को लेकर सरकार से जवाब मांगते हुए भाजपा पर राजनीतिक निशाना साधा गया है।

गोरखपुर सदर सांसद रवि किशन से विवाद के बाद भाजपा पार्षद विश्वजीत त्रिपाठी देंगे पार्टी को झटका

जल्द सपा में हो सकते हैं शामिल



गोरखपुर,संवाददाता। सदर सांसद रवि किशन के साथ बरसात और जलभराव के मुद्दे पर हुई तीखी बहस से सुर्खियों में आए भाजपा पार्षद विश्वजीत त्रिपाठी को लेकर उत्तर प्रदेश के सियासी गलियारों में हलचल तेज हो गई है। हालिया घटनाक्रमों के अनुसार, विश्वजीत त्रिपाठी ने भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव और उत्तर प्रदेश प्रभारी विनोद तावड़े से मिलने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया है। इसके बाद से ही उनके भाजपा छोड़ने की चर्चाएं जोरों पर हैं।

सूत्रों के मुताबिक, विश्वजीत त्रिपाठी ने हाल ही में लखनऊ में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से मुलाकात की है। माना जा रहा है कि वह जल्द ही आधिकारिक तौर पर समाजवादी पार्टी (सपा) का दामन थामेंगे।

ब्राह्मण समाज से आने वाले विश्वजीत त्रिपाठी को लेकर सियासी हलकों में यह भी चर्चा तेज है कि 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को देखते हुए समाजवादी पार्टी उन्हें पूर्वांचल में एक प्रमुख ब्राह्मण चेहरे के रूप में पेश कर सकती है। सपा नेतृत्व उन्हें 2027 में कोई बड़ी जिम्मेदारी देकर पूर्वांचल के ब्राह्मण मतदाताओं के बीच पैठ मजबूत करने की रणनीति बना रहा है।

जलजमाव की समस्या को लेकर सांसद रवि किशन और विश्वजीत त्रिपाठी के बीच हुई बातचीत का ऑडियो/वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। उस तीखी बहस के दौरान सांसद द्वारा सपा में जाने की बात कहे जाने पर विवाद और बढ़ गया था, जिसके बाद से ही विश्वजीत त्रिपाठी के बगावती सुर सार्वजनिक हो गए थे।

उत्तर प्रदेश में हो रहे एमएलसी चुनाव (गोरखपुर–फैजाबाद शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र) में भी विश्वजीत त्रिपाठी की भूमिका तय मानी जा रही है। वह भाजपा से सपा में शामिल हुए डॉ. संजयन त्रिपाठी के समर्थन में खुलकर प्रचार करेंगे।

गोरखपुर में भाजपा के स्थानीय निकाय स्तर पर इस तरह के घमासान और प्रमुख पार्षद के पाला बदलने से क्षेत्रीय राजनीति का तापमान चढ़ गया है, जिसे आगामी निकाय व विधानसभा चुनावों के लिहाज से एक बड़ा सियासी उलटफेर माना जा रहा है।

फिर चर्चा में सेलेब्स की नागरिकता



बालीवुड अभिनेता इमरान खान को मुंबई पुलिस ने भारत छोड़ने का नोटिस भेजा है। लेकिन ये पहली बार नहीं है जब किसी सेलिब्रिटी की नागरिकता पर सवाल खड़े हुए हैं। जानिए इमरान से पहले किन सितारों की नागरिकता पर बवाल हुआ है।

राइज एंड फाल 2-क्या फिर होगी पवन सिंह की एंट्री

एंटरटेनमेंट डेस्क। इन दिनों रियलिटी शो 'राइज एंड फॉल' का दूसरे सीजन काफी चर्चाओं में है। पहले सीजन में नजर आए पवन सिंह ने शो को बीच में ही छोड़ दिया था। अब खबरें हैं कि वह एक बार फिर टावर में नजर आ सकते हैं।

क्या है पूरा मामला?

पवन सिंह के शो में वापसी की खबरें तेज हैं। अगर ऐसा होता है, तो शो में बन चुके रिश्तों, दोस्ती और दुश्मनी के समीकरण बदल सकते हैं। हालांकि, उनकी वापसी को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। इंडिया टुडे की रिपोर्ट के मुताबिक, पवन सिंह शो में सरप्राइज एंट्री ले सकते हैं। पहले सीजन में वह एक रूलर यानी शासक की भूमिका में नजर आए थे। ऐसे में उनकी वापसी से शो में चल रहे मुकाबले को नया मोड़ मिल सकता है। साथ ही, पहले सीजन में अधूरी रह गई उनकी कहानी को भी आगे बढ़ने का मौका मिल सकता है।



कंटेस्टेंट्स के साथ अच्छी थी पवन सिंह की दोस्ती

पहले सीजन में पवन सिंह की दूसरे कंटेस्टेंट्स के साथ अच्छी बॉन्डिंग देखने को मिली थी। धनश्री वर्मा के साथ उनकी खास दोस्ती चर्चा में रही। इसके अलावा, शो के दूसरे सदस्यों के साथ भी उनके हंसी–मजाक और बातचीत के कई पल देखने को मिले थे।शो को बीच में छोड़ने से पहले पवन सिंह ने अपने साथी कंटेस्टेंट्स से एक भावुक बात कही थी। उन्होंने कहा था, श्जब भी मेरी याद आएगी, मैं लौट आऊंगा। अब उनकी संभावित वापसी की खबरों के बीच उनका यह वादा एक बार फिर चर्चा में आ गया है।

हारर फिल्म–डराने को तैयार हैं कृति सेनन



एंटरटेनमेंट डेस्क। अभिनेत्री कृति सेनन जल्द हॉरर फिल्म में दिखाई देंगी। वह जल्द दर्शकों को डराने बड़े पर्दे पर वापसी करने जा रही हैं। बीते दिनों विवादों से निकलने के बाद एक्ट्रेस से संबंधित कोई नई अपडेट फैंस को मिली है। अभिनेत्री कृति सेनन फिल्म 'भेड़िया' के बाद अब एक दूसरी हॉरर फिल्म में नजर आने वाली हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस फिल्म का निर्माण बड़े पैमाने पर होगा होगा। फिलहाल फिल्म से सिर्फ कृति के जुड़ने की जानकारी सामने आई है।

सिर्फ हॉरर पर बनेगी फिल्म

अभिनेत्री कृति सेनन की यह आगामी फिल्म पूरी तरह से हॉरर को केंद्र में रख कर निर्देशित की जाएगी। बीते कुछ समय से बॉलीवुड में ज्यादातर हॉरर कॉमेडी बेस्ड फिल्मों का निर्माण हुआ है। मगर यह फिल्म पूरी तरह से दर्शकों का सामना डर से कराएगी। हालांकि फिल्म की शूटिंग या कहानी को लेकर कोई भी हिंट मेकर्स ने नहीं दी।

कौन है निर्माता –निर्देशक

फिलहाल फिल्म को कौन निर्देशित करेगा इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। फिल्म का निर्माण मैडॉक फिल्म्स बैनर तले हो रहा है।

यह बैनर पहले भी स्त्री, भेड़िया और मुंज्या जैसी हॉरर केटेगरी की फिल्में बना चुका है। इसलिए यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह फिल्म दमदार साबित हो सकती है।

कृति सेनन ने दिया था जवाब

बॉलीवुड अभिनेत्री करीना कपूर खान द्वारा होस्ट किया जाने वाला बेहद लोकप्रिय टॉक शो और पॉडकास्ट श्व्हाट वीमेन वांटश के प्रोमो में कृति दिखाई दीं। इस दौरान उन्होंने कृति से कहा, 'मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि मेरी चोली प्राइम टाइम न्यूज में छह लोगों की पैनल चर्चा का मुद्दा बन गई थी। इस पर करीना ने कहा, श्मुझे पता है।श शो के आखिर में जब कृति से पूछा गया कि महिलाएं वास्तव में क्या चाहती हैं, तो उन्होंने जवाब दिया, जज न किया जाए और लोग अपने काम से काम रखें।

खूबसूरत अंदाज में छाईं नितांशी

फैशन वीक

बास लेडी बन रैंप पर उतरीं तेजस्वी प्रकाश

एंटरटेनमेंट डेस्क। बीते दिन राष्ट्रीय राजधानी में लैक्मे फैशन वीक में नितांशी गोयल और तेजस्वी प्रकाश ने जलवा बिखेरा। फैशन वीक के दूसरे दिन दोनों एक्ट्रेस जब रैंप पर उतरीं तो लोगों की नजरें ठहर गईं। नई दिल्ली में लैक्मे फैशन वीक 2026 चल रहा है। बीते दिन गुरुवार को चर्चित अभिनेत्री तेजस्वी प्रकाश अपने बॉस लेडी लुक से छा गईं। वहीं, फिल्म श्लापता लेडीज में भोलीभाली फूल कुमारी बन लोकप्रियता बटोरने वाली एक्ट्रेस नितांशी गोयल का ग्लैमरस अंदाज दिखा।



काशी लिबास में नितांशी का बिंदास लुक

अभिनेत्री नितांशी गोयल का लुक फैशन इवेंट से वायरल हो रहा है। नितांशी ने इस फैशन वीक में दूसरे दिन मशहूर डिजाइनर सुनीत वर्मा के लिए शोस्टॉपर के तौर पर रैंप वॉक किया। सुनीत वर्मा ने अपने लेबल श्एसवीश के तहत काशी नामक नया कलेक्शन पेश किया। श्काशीश कलेक्शन वाराणसी के रंगों, बनावट और संस्कृति से प्रेरित है।

वाइन कलर ड्रेस में दिखा खूबसूरत लुक

फैशन वीक में नितांशी गोयल बेहद स्टाइलिश और खूबसूरत अंदाज में नजर आईं। वे वाइन कलर के फिशटेल लहंगे में बेहद आकर्षक लगीं। इस लहंगे के साथ स्ट्रैपलेस टॉप था, जिसमें एक ड्रेप भी जुड़ा हुआ था। इस ड्रेस पर प्लम और सिल्वर रंग के पैलेट्स लगे थे, जिसने उनके लुक में चार चांद लगा दिए।

बॉस लेडी बन छाईं तेजस्वी प्रकाश

इसी फैशन वीक में बिग बॉस 15 की विनर और एक्ट्रेस तेजस्वी प्रकाश भी नजर आईं। वे बॉस लेडी बनकर रैंप पर उतरीं। तेजस्वी प्रकाश ने भी शोस्टॉपर के रूप में रैंप वॉक किया। उन्होंने एनआईएफ ग्लोबल के शो द रनवे के लिए रैंप पर जलवा बिखेरा। बता दें कि लैक्मे फैशन वीक, फैशन और लाइफस्टाइल इवेंट है, जिसे फैशन डिजाइन काउंसिल ऑफ इंडिया के सहयोग से आयोजित किया जाता है।

मोनालिसा-आप इससे कहीं ज्यादा मजबूत हैं..

नवरात्रि में भोजपुरी अभिनेत्री ने दिया पावरफुल रिमाइंडर



एंटरटेनमेंट डेस्क। भोजपुरी अभिनेत्री मोनालिसा ने अपनी कुछ तस्वीरें इंस्टाग्राम पर शेयर की हैं। इसके साथ उन्होंने एक पावरफुल मैसेज दिया है।शारदीय नवरात्रि चल रहे हैं। श्रद्धालु माता रानी की भक्ति में लीन हैं। इन दिनों गरबा भी खेला जाता है। इंडस्ट्री में भी इन पावन दिनों में खूब रौनक देखी जाती है। भोजपुरी अदाकारा मोनालिसा ने अपनी कुछ फोटोज इंस्टाग्राम पर शेयर की हैं।

मोनालिसा ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट साझा किया है। उन्होंने अपनी कई तस्वीरें पोस्ट की हैं। मोनालिसा साड़ी में ट्रेडिशनल लुक में नजर आ रही हैं। उन्होंने इसके साथ हैवी ज्वैलरी पहनी है।

तस्वीरों के साथ मोनालिसा ने फैंस को एक खास मैसेज दिया है। अभिनेत्री ने कैप्शन लिखा है, श्नवरात्रि। नौ रातें...एक जरूरी बात, जो याद रखनी चाहिए।

आप जिस दौर, जिस समय से गुजर रहे हैं, उससे कहीं ज्यादा मजबूत हैं।

– नितांशी गोयल

एशियाड के पदकवीरों का सम्मान

पीएम मोदी के संबोधन के बीच वैभव पर क्यों गई कैमरे की नजर, क्यों खिल उठा चेहरा

स्पोर्ट्स डेस्क। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एशियाई खेल 2026 के भारतीय पदक विजेताओं के सम्मान समारोह में 15 से 17 साल के खिलाड़ियों की उपलब्धियों की तारीफ की। उन्होंने कहा कि सफलता के लिए उम्र बाधा नहीं है। इस दौरान कैमरे में वैभव सूर्यवंशी की मुस्कान कैद हुई। पीएम ने महिला खिलाड़ियों के 38 पदकों और 11 स्वर्ण की भी सराहना की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को दिल्ली के अशोक होटल में एशियाई खेल 2026 में हिस्सा लेने वाले भारतीय खिलाड़ियों के दल को सम्मानित किया। इस कार्यक्रम में भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम के युवा खिलाड़ी वैभव सूर्यवंशी भी मौजूद थे। समारोह के दौरान पीएम मोदी ने 15 से 17 साल की उम्र के खिलाड़ियों की उपलब्धियों का जिक्र किया। उनकी इस बात पर वैभव सूर्यवंशी के चेहरे पर मुस्कान आ गई। हालांकि, प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में वैभव का नाम नहीं लिया।



15 से 17 साल के खिलाड़ियों का किया जिक्र

प्रधानमंत्री मोदी ने एशियाई खेलों में भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन की तारीफ करते हुए कहा कि कम उम्र में ही देश के खिलाड़ी बड़े मंच पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं। उन्होंने 15 से 17 साल के खिलाड़ियों की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए कहा कि सफलता हासिल करने के लिए उम्र कोई बाधा नहीं है। पीएम मोदी ने कहा, इस बार एशियाई खेलों में भारतीय टीम में ऐसे कई खिलाड़ी थे, जिनकी उम्र महज 15 से 17 साल थी। इतनी कम उम्र में इन खिलाड़ियों ने अपने शानदार प्रदर्शन से देश का गौरव बढ़ाया है। उन्होंने देशवासियों का दिल जीता है। यह दिखाता है कि सफलता के लिए उम्र कोई बंधन नहीं है। खेलों में कम उम्र में की गई शुरुआत एक अतिरिक्त लाभ बन जाती है। प्रधानमंत्री के इसी बयान के दौरान कैमरे का फोकस वैभव सूर्यवंशी पर गया। उनकी प्रतिक्रिया में चेहरे पर मुस्कान दिखाई दी। इसी वजह से कार्यक्रम का यह पल चर्चा में आया।

कम उम्र में प्रतिभा पहचानने पर जोर



पीएम मोदी ने खेलों में युवा प्रतिभाओं को पहचानने और उन्हें बेहतर प्रशिक्षण देने की जरूरत पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि बच्चों की प्रतिभा की पहचान कम उम्र में हो, ताकि उन्हें आगे बढ़ने के लिए सही अवसर मिल सकें। उन्होंने कहा, इसलिए हमारा प्रयास है कि खेलों में प्रतिभा की पहचान कम उम्र में ही हो। पांच से 15 साल तक के बच्चों की खेल प्रतिभा को पहचानने और उन्हें प्रशिक्षण देने पर हमारा विशेष ध्यान है। आने वाले वर्षों में खेलो इंडिया और इमर्जिंग खेलो इंडिया के माध्यम से हजारों नए खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा।इ

भारतीय बेटियों की उपलब्धियों को भी सराहा

प्रधानमंत्री ने एशियाई खेलों में भारतीय महिला खिलाड़ियों के प्रदर्शन की भी विशेष रूप से तारीफ की। उन्होंने कहा कि भारत के कुल 85 पदकों में से 38 पदक महिला खिलाड़ियों ने जीते, जिनमें 11 स्वर्ण पदक शामिल हैं। पीएम मोदी ने कहा, श्मैं अपनी बेटियों की विशेष रूप से प्रशंसा करना चाहूंगा। भारत ने जो 85 पदक जीते, उनमें से 38 पदक हमारी महिला खिलाड़ियों ने जीते और इनमें 11 स्वर्ण पदक शामिल हैं। ये पदक सिर्फ एक संख्या नहीं हैं। यह नए भारत की तस्वीर है। गवैभव सूर्यवंशी एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम का हिस्सा थे। समारोह में प्रधानमंत्री के संबोधन के दौरान उनकी मुस्कान ने सबका ध्यान खींचा।

पैरा एशियन गेम्स–सुहास एलवाई की बैडमिंटन में जीत से शुरुआत, टेबल टेनिस खिलाड़ी भाविना ने भी पार की पहली बाधा

स्पोर्ट्स डेस्क। पैरा एशियन गेम्स की आधिकारिक तौर पर शुरुआत होने में दो दिन का समय शेष है, लेकिन कुछ स्पर्धाएं शुरू हो गई है। बैडमिंटन और टेबल टेनिस में भारतीय पैरा खिलाड़ियों ने जीत के साथ शुरुआत की है। पदक के सबसे बड़े दावेदार सुहास एलवाई और भाविना पटेल ने पहली बाधा पार कर ली है। सुहास एलवाई ने पैरा एशियन गेम्स की बैडमिंटन स्पर्धा में विजयी शुरुआत की है। टोक्यो और पेरिस पैरालंपिक के दो बार के रजत पदक विजेता और मौजूदा चौंपियन सुहास ने शुक्रवार को पुरुष एकल एसएल4 ग्रुप ई के अपने शुरुआती मुकाबले में बांग्लादेश के जोयतु धर को सीधे गेम में 21–8, 21–11 से करारी शिकस्त दी। सुहास एक आईएएस अधिकारी भी हैं और उन्होंने पिछले एशियाई पैरा खेलों में स्वर्ण पदक जीता था।

अभिजीत ने चीनी ताइपे के खिलाड़ी को हराया

पुरुष एकल एसएल4 वर्ग में भारत के एक अन्य खिलाड़ी अभिजीत सखूजा ने चीनी ताइपे के एन–चुआन येह को 21–17, 21–12 से हराया। टोक्यो पैरालंपिक के स्वर्ण पदक विजेता और एशियाई पैरा खेलों के पदक विजेता कृष्णा नगर ने भी पुरुष एकल एसएच6 ग्रुप सी के अपने पहले मैच में चीनी ताइपे के जिया–सियांग लिंग को 21–5, 21–4 से मात देकर सकारात्मक शुरुआत की। एसएच6 वर्ग के एक अन्य भारतीय खिलाड़ी शिवराजन सोलाइमलाई ने भी फिलीपींस के जॉन साइरस मैक्लैंग को 21–7, 21–6 से हराकर अपना पहला ग्रुप मैच जीत लिया। मिश्रित युगल एसएल3–एसयू5 ग्रुप ए के एक मुकाबले में मनीषा रामदास और प्रमोद भगत की भारतीय जोड़ी ने चीन के लिचुआन शियोंग और टोंगटोंग ली को 21–16, 19–21, 21–16 से पराजित किया। हालांकि, मानसी जोशी और रुथिक रघुपति को इंडोनेशिया के खालिमातुस सादियाह और फ्रेडी सेतियावान के खिलाफ अपने शुरुआती ग्रुप मैच में 15–21, 4–21 से हार का सामना करना पड़ा।

महिला एकल एसएल3 वर्ग में पूर्व विश्व चौंपियन मानसी जोशी को अपने शुरुआती ग्रुप ए मुकाबले में चीन की युएमेई लियू के हाथों 15–21, 21–14, 15–21 से हार मिली। इसके अलावा संजना कुमारी ने हांगकांग की चाई सैयांग को 21–4, 21–6 से हराकर अपना शुरुआती एसएल3 ग्रुप मैच जीत लिया।

पिछले साल जो सपना टूटा उसे स्वर्ण से भुलाना चाहेंगी पैरा एथलीट सिमरन

स्पोर्ट्स डेस्क। जापान में 18 से 24 अक्तूबर तक होने वाले एशियाई पैरा खेलों की तैयारी कर रहीं भारतीय पैरा एथलीट सिमरन शर्मा के लिए यह टूर्नामेंट केवल स्वर्ण जीतने तक सीमित नहीं है, उनके लिए यह पिछले साल मिले धोखे और सपना टूटने वाली यादों को भुलाने का एक मौका भी है।

पल भर में गायब हुई थी खुशी

26 वर्षीय टी 12 श्रेणी की धाविका सिमरन पिछले साल नई दिल्ली में हुए विश्व पैरा एथलेटिक्स चौंपियनशिप में 100 मीटर की चौंपियन थीं। उन्होंने 200 मीटर में रजत जीता था। लेकिन खुशी कुछ क्षण में ही गायब हो गई जब उनके पूर्व गाइड रनर उमर सैफी पर प्रतिबंधित पदार्थ के इस्तेमाल का आरोप लगा। पिछले खेलों में रजत जीतने वाली सिमरन ने साफ कहा कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी। वह कहती हैं, कभी–कभी मैं बैठकर रोती हूं। अगर रिपोर्ट दो दिन पहले आ जाती तो मैं उनके साथ दौड़ती ही नहीं। राष्ट्रगान बजने का अनुभव अद्भुत था, लेकिन फिर लगा जैसे किसी ने सपना तोड़ दिया हो। उन्होंने सैफी की आर्थिक मदद भी की थी।

विज्ञापन

सोशल मीडिया से ढूंढा रनर

इस घटना के बाद सिमरन ने करीब छह हफ्ते प्रशिक्षण से ब्रेक लिया। फिर उन्होंने नए गाइड रनर की तलाश शुरू की और इंस्टाग्राम के जरिए शिवम से संपर्क हुआ। सिमरन और उनके पति–कोच गज्जू ने शिवम के 100 और 200 मीटर के वीडियो देखे और प्रभावित हुए। 2026 की शुरुआत में दोनों ने साथ ट्रेनिंग शुरू की।

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

UPHIN/2023/90814

बृजेन्द्र कुमार

मो0. नं0. 7307180148,9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

आईपीएल 2027- क्या अगले सीजन में हिस्सा नहीं लेंगे स्टार्क

स्पोर्ट्स डेस्क। आईपीएल 2027 का सीजन शुरू होने में अभी समय है, लेकिन इससे पहले ही ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क के खेलने को लेकर अटकलों का बाजार गर्म हो गया है। स्टार्क पहले भी इस टूर्नामेंट से बाहर रह चुके हैं। आईपीएल के अगले सीजन में अभी कुछ महीने बाकी हैं, लेकिन कई ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों की भागीदारी को लेकर अटकलें शुरू हो चुकी हैं। इसमें सबसे मुख्य चर्चा बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क को लेकर है, जो वर्तमान में दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) टीम से जुड़े हुए हैं। एक हालिया साक्षात्कार में स्टार्क ने कहा कि आईपीएल 2027 में उनके खेलने या इस टूर्नामेंट से हटने को लेकर अभी तक कुछ भी ठोस तय नहीं हुआ है। दिल्ली ने 2024 की मेगा नीलामी में इस ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज को खरीदने के लिए 11.75 करोड़ रुपये खर्च किए थे।



अनिश्चितता क्यों है?

यदि स्टार्क पूरी तरह से फिट रहते हैं, तो वह अगले साल 21 जनवरी से 3 मार्च, 2027 तक चलने वाले भारत दौरे के लिए ऑस्ट्रेलिया की टेस्ट टीम का हिस्सा होंगे। इस दौरे के ठीक बाद पहला टेस्ट खेले जाने के 150 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच एक इकलौता टेस्ट मैच खेला जाना है। आईपीएल 2027 भी इसी अवधि के आसपास शुरू होने की संभावना है, जिससे खिलाड़ियों का शेड्यूल काफी व्यस्त हो जाएगा। स्टार्क 2009 से एक सक्रिय पेशेवर क्रिकेटर रहे हैं, जब उन्होंने अपना प्रथम श्रेणी डेब्यू किया था।

इसके एक साल बाद उन्होंने अपना अंतरराष्ट्रीय पदार्पण किया। इसके बाद उन्होंने रॉयल चौलेंजर्स बंगलूरू के लिए 2014 और 2015 में लगातार दो आईपीएल सीजन में भाग लिया, लेकिन अपने देश के करियर को प्राथमिकता देने के लिए लगभग एक दशक तक इस टूर्नामेंट से दूर रहे। वह 2024 सीजन में आईपीएल में लौटे और कोलकाता नाइट राइडर्स के खिताबी अभियान में अहम भूमिका निभाई। इसके बाद से वह दिल्ली टीम का हिस्सा रहे हैं।

बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी के दौरान होगा अंतिम फैसला?

इस साल की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया के मुख्य कोच एंड्रयू मैकडोनाल्ड ने कहा था कि हालांकि आईपीएल एक ऐसा टूर्नामेंट बना हुआ है जिसमें ऑस्ट्रेलिया अपने खिलाड़ियों को भाग लेते देखना चाहता है, लेकिन अंतिम निर्णय उनके व्यक्तिगत कार्यभार (वर्कलोड) पर निर्भर करेगा। मैकडोनाल्ड ने कहा, मुझे पता है कि लोग आईपीएल के बारे में बात करना शुरू कर देंगे और उसकी रूपरेखा तैयार करने की सोचेंगे। मैंने पहले भी यह कहा है कि आईपीएल हमारे कई खिलाड़ियों के लिए हमारी प्रबंधन योजना का हिस्सा है, और टी20 क्रिकेट के लिहाज से इस प्रतियोगिता में हमारे सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को उतारने के अपने प्रदर्शन से जुड़े लाभ भी हैं। आपको बस उस संतुलन को बनाकर चलना होगा। आप हर टेस्ट मैच के हिसाब से फैसले लेते हैं और भारत दौरे के आखिर में आईपीएल को लेकर भी एक बार फिर फैसला लिया जाएगा।